मैत्रेयीकृति

हिंदी ई-पत्रिका

विद्यार्थियों के लिए, विद्यार्थियों के द्वारा

वर्ष -5,अंक 9-10

जनवरी-दिसम्बर 2023

मैत्रेयीकृति (हिंदी ई पत्रिका)

मैत्रेयी महाविद्यालय
(राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद द्वारा ए++ ग्रेड प्राप्त)
दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रो. हरित्मा चोपड़ा

डॉ.पुष्पा गुप्ता

मानसी चौधरी

चंचल

साक्षी त्रिवेदी

कोमल

विद्यावती

आशी

संरक्षण एवं परामर्श : प्रो. हरित्मा चोपड़ा
संपादन: डॉ.पुष्पा गुप्ता
आवरण पृष्ठ :साक्षी त्रिवेदी
चयन एवं तकनीकी संपादन: मानसी चौधरी
चित्र संपादन: चंचल
टंकण: कोमल,विद्यावती,आशी

<u>शुभकामना संदेश</u>

वर्ष 2022 की अंतिम तिमाही में राष्ट्रीय स्तर पर महाविद्यालय एक और सोपान उपर चढकर ए++ श्रेणी में आ गया था। अतः वर्ष 2023 में उपलब्धियों के नवीन क्षितिजों तक पहुंचने का लक्ष्य निश्चित करना स्वाभाविक था, जिन्हें पूरा करने में प्रत्येक विद्यार्थी की अपनी एक सुनिश्चित भूमिका होती है। रचनात्मकता भी उसी लक्ष्य की ओर पहुंचने का एक प्रयास है। अतः अभिव्यक्ति का प्रत्येक स्वर अपनी संपूर्णता में मुखर हो, अपने इच्छित समूहों तक पहुंचे, ऐसी मेरी शुभकामना है।

प्रो. हरित्मा चोपड़ा

कार्यवाहक प्राचार्या

संपादकीय

नव वर्ष के आगमन से पूर्व ही हम उत्साह और स्फूर्ति का अनुभव करते हैं, मन में भविष्य के प्रति सकारात्मक ऊर्जा और ढेर सारी उमंगों के साथ हम नव वर्ष के स्वागत में तत्पर होते हैं। इस संदर्भ में मुझे कवि सोहनलाल द्विवेदी की पंक्तियां याद आ रही हैं:

स्वागत! जीवन के नवल वर्ष
आओ, नूतन-निर्माण लिये,
इस महा जागरण के युग में
जाग्रत जीवन अभिमान लिये;

यह वर्ष पूरी तरह से ऑफलाइन हो गया था तो यह समय संपूर्ण सक्रियता का रहा। विभिन्न क्षेत्रों में अनेक उपलब्धियां देश की झोली में आयीं। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के वैज्ञानिकों ने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर चंद्रयान-3 का सफल प्रक्षेपण किया; साथ ही सूर्य का अध्ययन करने के लिए पहले सौर मिशन आदित्य- एल को भी उसकी कक्षा में सफलता पूर्वक उतार कर नया इतिहास रचा। एशियाई खेलों में 28 स्वर्ण, 38 रजत और 41 कांस्य पदकों सहित 107 पदक जीतकर देश ने नया मानदंड स्थापित किया। जी-20 शिखर सम्मेलन का आयोजन वैश्विक स्तर पर आर्थिक एवं वित्तीय स्थिरता की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण प्रयास रहा। इसके अतिरिक्त पी-20 शिखर सम्मेलन का आयोजन अलग-अलग संसदीय शैलियों के अनुभव का लाभ उठाकर मानवीय गरिमा की सुरक्षा के लिए किया जा रहे साझे प्रयासों का दस्तावेज है। इन्हीं महत्वपूर्ण घटनाओं के आलोक में विद्यार्थियों की रचनात्मकता ने आकार पाया है।

कविता, कहानी, यात्रा-वृत्तांत, चित्र और अलग-अलग समय पर विद्यालय परिसर के छायाचित्र पत्रिका का हिस्सा बने हैं।
इस वर्ष की पत्रिका के संयुक्तांक 9-10 को आप सबको सौंपने से पहले मैं प्राचार्या प्रो.हरित्मा चोपड़ा के प्रति हार्दिक आभार एवं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूं क्योंकि प्रत्येक स्थिति में उनका संरक्षण और मार्गदर्शन ही पत्रिका के लिए जीवनामृत का काम करता है। विभाग तो प्रत्येक स्थिति में धन्यवाद का अधिकारी है ही। अंत में पत्रिका से प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों रूपों में संबद्ध विद्यार्थियों का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूं जिनके कारण पत्रिका का यह अंक रूपाकार पा सका।

डॉ.पुष्पा गुप्ता
हिंदी विभाग

छात्र संपादकीय

दिल्ली विश्वविद्यालय के महाविद्यालयों में से एक हमारा मैत्रेयी महाविद्यालय है।यहां स्त्री सशक्तिकरण को प्रोत्साहित करने का प्रत्येक संभव प्रयास किया जाता है।मैत्रेयीकृति भी उस श्रृंखला की एक कड़ी है। मैत्रेयीकृति के माध्यम से छात्राओं की सभी तरह की रचनाओं, चित्रकारी व फोटोग्राफी को एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान किया जाता है। पत्रिका में हर छात्रा की साहित्यिक प्रतिभा का स्तर हर नए अंक के साथ और बेहतर होता जाता है। हर वर्ष यह पत्रिका स्वयं में एक नया रूप लिए संकलित होती है। यह मेरा सौभाग्य है कि मैं इस पत्रिका के साथ जुड़ी और इसका एक हिस्सा बनी। पत्रिका में अभिव्यक्त विभिन्न विषय हमें अपनी ओर आकर्षित करते हैं । हम यह समझ पाते हैं कि प्रत्येक रचना अलग भाव लिए हुए होती है। पत्रिका से जुड़कर मुझे भी उसके विभिन्न पक्षों से जुड़े हुए अनुभवों से निकलने का अवसर प्राप्त हुआ और कई नए अनुभव भी प्राप्त हुए । मैत्रेयीकृति में सहभागिता से काम करते हुए हम सभी ने सामूहिक कार्य को सीमित समय में सफलतापूर्वक पूर्ण करना सीखा। सभी सदस्यों के योगदान के कारण ही हम मैत्रेयीकृति का सफलता पूर्ण प्रकाशन कर पाए हैं।

मानसी चौधरी
हिन्दी विशेष तृतीय वर्ष

अनुक्रमणिका

शुभकामना संदेश............ii

संपादकीय.................... iii

छात्र संपादकीय..............v

साहित्य..........................1

सोशल मीडिया और संबंधों का बिगड़ता स्वरूप 2

दोस्ती..........................4

उलझन 4

एक सीख ‘चाँद’ से..........5

फॉलो..........................5

पक्षियों का जीवन...........5

पृथ्वी की फ़रियाद 6

सुनो प्रिय… 6

होते हैं पुरुष भी खूबसूरत ..7

पिता 8

पता ही नहीं चला........... 9

पुष्प सौंदर्य 9

देख रहा हूँ - 10

न जाने ये ज़िंदगी 10

और मैं 11

घर 12

प्रेम 13

सीमित 14

ठीक उतनी मुहब्बत...... 15

वसंत ऋतु 15

मेरे सतगुरु 16

माँग 16

सोशल मीडिया और संबंध 18

कहानियाँ 19

सोशल मीडिया और संबंधों का बिगड़ता स्वरूप.......20
मेरे विचार..................22
मेरा अनुभव...............22
बचपन.......................23
मेला..........................24
परिवार.......................25
विज्ञापन.....................25
माता-पिता का महत्व....26
अंतर्मुखी व्यक्ति का जीवन 26
प्रकृति.......................27
छोटी-छोटी जीत 27
माँ 28
सपने.........................29
बढ़ती हुई गर्मी.............30
भोजन....................... 30
लिंग असमानता.......... 31
भाषा का महत्व........... 31
कॉलेज की शुरुआत 32
फेमिनिज्म 33
महिलाओं की कहानियाँ. 34
डराना-धमकाना 34
कैरियर और परिवार के बीच संतुलन..................... 35
तूलिका और रंग-संयोजन . 36
अंबुज....................... 37
मनभावन.................. 38
बेल-बूटा.................... 39
सूर्य नमस्कार 40
सोच-विचार................ 41
पृष्ठभूमि.................. 42

हूबहू..........................43
वनराज 44
कैमरे की आंख और कॉलेज परिसर..........................45
फुलवारी 46
हरियाली.....................47
दूरदृष्टि......................48
छत पर मोर 49
मैदान 50
हेलिकॉप्टर.................51
सघन हरीतिमा 52
बैठे-ठाले.....................53
सड़क पर मोर 54
प्रौढ़ वृक्ष और मार्ग......55
प्रस्तुति 56
बादल और पार्किंग.......57
खिड़की पर चांद 58
बादलों के घेरे में 59
नील गगन की छांव में 60
परछाईं 61
पुष्प-सौंन्दर्य 62
यूं ही 63
किताबों की दुनिया...... 64
लाइब्रेरी 65
सड़क 66

साहित्य

सोशल मीडिया और संबंधों का बिगड़ता स्वरूप

हम तो आए थे करने
चैटिंग अपनी वाली से,
और करने लगे चैटिंग
बुआ हाथरस वाली से ,
एक मैसेज बुआ का आता,
दूजामेरी वाली का आता,
मैं असमंजस में पड़ जाता
और भेद न दोनों में कर पाता।
जैसे- तैसे रिप्लाई कर देता.
लेकिन....
हो न जाए मैसेज की
अदला-बदली
इससे मन में
बवन्डर भी और गहराता |
जिसका डर था आखिर
वह पल भी आया,
अचानक बुआ जी का
एक मैसेज आया।
मैं सन्न सा रह गया,
लिखा था मैसेज में कि
"तुम्हें तमीज नहीं रत्ती भर भी,
समझ नाम की चीज नहीं।
इतना कहकर बुआ ने
मुझे ब्लॉक किया ,अब मैनें सोचा
एक बार मैसेज बैक तो कर लूँ,
क्या सचमुच मुझसे
गलती हुई ये देखकर
अपने व्यथित मन को
सांत्वना से भर लूँ।
मैंने मेसेज चेक किया
उसमें जानू, सोना, मोना,
जादू- टोना जो मैंने देखा,
मानो किसी ने
सीने में चाबुक घोपा।
मैं लथपथ पसीने से हुआ
धिक्कार हुआ मुझे
सोशल मीडिया पर होने से।
अगर नहीं बिठा सकता था
सामंजस्य दोनों में तो,
छोड़ भी सकता था
कुछ देर अपनी वाली को।
क्या जरूरत थी
नाराज करने की
बुआ हाथरस वाली को।
अब मिर्च-मसाला लगाकर
पेश करेंगी पूरी रिश्तेदारी में
खबर इस बाबू वाली की
और वैसे भी तो
हाथरस की हींग
और बुआ जी की
चुगली वाली बीन
जग-जाहिर है
खबरों को चटपटा बनाने में
तो गोदी मीडिया
से भी माहिर हैं।
खैर कुछ दिन बाद बुआ ने
मुझे अनब्लॉक किया
आज मैंने मारे खुशी के

उनको केवल प्रणाम किया।
पर न जाने क्यों बुआ ने
मुझे न कोई रिप्लाई किया।
थोड़ी देर में
एक स्टेटस डाला।
मैनें बावले से अंदाज में
उसे देख डाला
अंदर से मेरी आँते हिल गयीं,
ऐसा लगा मानो
गिनी-चुनी सांसें थम गयीं।
मैने सोचा मेरी गलती
कुछ इतनी बड़ी भी न थी।
जो बुआ ने डील की रिपोर्ट
सार्वजनिक करने की
माँग कर दी।
पर कैसे कह देता कि
गुम है मेरी फाइल अभी,
कि नहीं दिखा सकता
लाइफ लाइन अभी।
फिर मैंने भी कमर कस ली
और स्टेटस
की लड़ाई अब जोरों पर थी।
उस दिन एहसास हुआ मुझे कुछ ऐसा ,
सब कुछ मोह-माया हैं
छोड़कर बन जाऊँ पहले जैसा।
भगवान का शुक्र है ,
कि पहले सोशल मीडिया का जमाना न था।
किसी को किसी का बुरा
लग जाने का भय न सताता था।
न ही शौर्य गाथा सुन पाते
हम राणाप्रताप और शिवाजी
जैसे वीरों की,
जिन्होंने सिट्टी के खातिर
अपने प्राणों की आहुति दी।
क्योंकि पहले के युद्ध
हल्दीघाटी और पानीपत में लड़े जाते थे,
आज के युद्ध तो केवल
स्टेटस तक सिमट कर रह जाते है।

शिप्रा तिवारी
हिन्दी विशेष तृतीय वर्ष

अयं निजं परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदार चरितानाम् तु वसुधैव कुटुंबकम्।।

महोपनिषद,अध्याय6,मंत्र 31

दोस्ती

एक बेंच और हम चार
पर यादें हजार
सफर छोटा हो या बड़ा
होता है यादगार,
काश मिलने की
कोई जगह मिल जाए.
साथ बिताए वह पल
वापस आ जाएं
अपनी-अपनी आंखें बंद करें,
तो हर लम्हा हसीन
और यादगार बन जाए
जिंदगी मासूम थी बड़ी
न जाने जिम्मेदारियां
कब सिखा गई,
वक्त के साथ अपनों की
कदर समझा गई,
बहते लम्हों को
पत्थर की ठोकर से
लड़ना सीखा गई
कभी खुशी, कभी गम
किसी से बनती थोड़ी
ज्यादा थोड़ी कम
साथ हो अच्छे
दोस्तों का अगर
तो जिंदगी भी
किसी जन्नत से
कभी कम नहीं होती।
दोस्ती की महक
किसी से कम नहीं होती
किसी की दोस्ती
आज है तो कल नहीं होती

आरुषि गुप्ता
बी.एस.सी. जीव विज्ञान विशेष प्रथम वर्ष

उलझन

उलझन
बढ़-बढ़ जाती हैं
और हमको बड़ा सताती है
मेरी उलझनें काम की,
परिवार की,
नाम की, अभियान की,
जीवन को दौड़ बनाती हैं
बस उलझन बढ़ जाती है।
प्यार की ललकार की

सौम्या लक्षाकार
प्राणि विज्ञान विशेष प्रथम वर्ष

एक सीख 'चाँद' से

अंधेरा जितना अधिक होगा
चांद की चमक भी उतनी ही बढ़ेगी
चाँद की तरह ही है
मनुष्य जीवन भी
वह जितना अधिक
परिश्रम करेगा
उतना ही चमकेगा
अर्थात सफलता के
ऊंचे शिखर तक पहुँचेगा
एक सी है
चाँद की चमक और
व्यक्ति की सफलता

निधि
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

फॉलो

कोई हमारी नकल करता है
तो बुरा न मानिए
बल्की खुश होइए
क्योंकि किसी व्यक्ति द्वारा
हमें फॉलो किया जा रहा है

निधि
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

पक्षियों का जीवन

कैसा यह पक्षियों का जीवन
जहाँ पंख फड़फड़ाकर
तुरंत अदृश्य हो जाते हैं
भोर में सर्वप्रथम उठ
जग में सोए प्राणियों की
कलरव करके आंखें खुलवाते
एहसास दिलाते प्रभात होने का
कैसा यह पक्षियों का जीवन
मनुष्य की भांति
इनका ना होता कोई
रेन बसेरा
आज इस पेड़ पर चहचहाते फिरते
शिकारी को देख मन घबराए
दानी को देख मन हर्षित हुए
कैसा यह पक्षियों का जीवन
सवेरे बखत उठ लग जाते हैं
दाना पानी की तलाश में
हो जाए प्राप्त तन मन दोनों खुश
अगर ना हो हासिल
चुग्गा पानी निसिदिन
उनको नींद ना आवे
कैसा यह पक्षियों का जीवन।

निधि
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

पृथ्वी की फ़रियाद

क्यों कर रहे हो मुझे बर्बाद?
है मेरी एक छोटी सी फ़रियाद
जीवनदायिनी हूँ मैं तुम्हारी,
मैं न रही तो
तुम जी न पाओगे,
हवा, पानी और जीवन को
तरस जाओगे ।
न पहुँचाओ मुझे कष्ट,
वरना तुम स्वयं ही
हो जाओगे नष्ट,
न फैलाओ कूड़ा-करकट,
नदियों में मैला न छोड़ो
जल जीवन है, इसे बचाओ
वृक्ष न काटो बल्कि और लगाओ,
रोको प्रदूषण, पर्यावरण बचाओ ।
न करो अपने जीवन को खराब,
है मेरी एक छोटी सी फ़रियाद ।
किसी ने कहा है
कि अच्छे कर्म करोगे,
तो मरने के बाद स्वर्ग मिलेगा।
और मैं कहती हूँ
कि पर्यावरण बचाओगे
तो जीते जी
धरती पर स्वर्ग मिलेगा।

ईशिता
बी.ए प्रोग्राम तृतीय वर्ष

सुनो प्रिय...

सफेद चाँद झांक रहा है,
शायद कुछ कह रहा है तुमसे।
सुनो प्रिय!
तुम कहते हो
"लिखना छूट गया है मेरा"
भला छूट सकती है क्या?
चाँदनी चाँद से
और सीता राम से
तुम्हारे सानिध्य में रहकर
बहुत कुछ सीखा है मैंने,
सुनो प्रिय!
भला छूट सकता है क्या?
कीचड़ में कमल का सुशोभित होना,
और मधु का कली पर मोहित होना
सफेद चाँद झांक रहा है,
शायद कुछ कह रहा है तुमसे।
सुनो प्रिय!
यूं तो तुमको फूल लिखूं,
सोचूं फिर क्या-क्या लिखूं..?
कुछ पन्ने अतिरिक्त छोड़े हैं,
कुछ पन्ने तुम खुद लिखना॥
सुनो प्रिय!
चाँद झांक रहा है,
शायद कुछ कह रहा है तुमसे॥

आंचल झा
हिंदी विशेष प्रथम वर्ष

होते हैं पुरुष भी खूबसूरत

तुमने लिख दिया है
स्त्री को सुंदर,
कभी देखी है सुरम्यता पुरुष की
उनके मौन की,
उनके साहस की,
उनके प्यार की,
होते हैं सुंदर वो पुरुष,
जिन्होंने सोचा है ,
पहली तनख्वाह में
साड़ी मां के लिए,
एक कमीज़ पिता के लिए,
जिन्होंने सोचा है
अच्छे घर में कन्यादान बहन का...
जिन्होंने सोचा
सबको खुदसे पहले
और बस सोचा प्रेम को
होते हैं वे पुरुष खूबसूरत,
जिन्होंने बिताया
जीवन का पहला भाग
पाने में खुद को ,
बनाने में खुद को ,
थोड़ा सा भुलाने में उसक,
और जो चाहे सिर्फ़ किसी एक को
वो होते हैं खूबसूरत
जिसने देखा हो केवल मन,
पाने की कुछ भी आस नहीं...
जिन्हें पसंद हो केवल उनको सुनना ,
तब सुनने के अलावा
उनको और कुछ भी काम नहीं
होते हैं वे पुरुष खूबसूरत
जिन्होंने लिखा है स्त्री को सुंदर,
जिन्होंने दी हैं उपमाएं
हिरण की, नदी की,
फूल की, किरण की...
होते हैं वे तमाम पुरुष सुंदर
जो सोचे सब को
खुद से पहले...
जिन्होंने सोचा है
स्त्री को खुद से पहले,
जो प्रेम में हो और हां!
प्रेम का अर्थ केवल प्रेम से हो,
मर्यादा से हो,समझाने-बुझाने की
तमाम कोशिशों से हो...
और होती हैं वे
तमाम स्त्रियां खूबसूरत
जो केवल स्त्रीवादी नहीं होती,
जिनके आँचल में
समाया हो संपूर्ण संसार
होती हैं वे स्त्रियां खूबसूरत
जिनके हिस्से में आया हो
पुरुष का प्यार,
तुमने लिख दिया है
स्त्री को सुंदर,
कभी देखी है सुरम्यता पुरुष की...
होती हैं वे स्त्रियां खूबसूरत,
जो सोचे पुरुष को,
समझे पुरुष को और
लिखे "ख़ूबसूरत" पुरुष को।

आंचल झा
हिंदी विशेष प्रथम वर्ष

पिता

संतान का पहला
शब्द भले ही मां होता है,
परंतु उसे पहचान
एक पिता देता है।
मैंने देखा है उन्हें
पाई-पाई को जोड़ते ,
अपनों के लिए
स्वयं के सपने छोड़ते।

क्या लिखूँ 'पिता' पर,
कुछ समझ नहीं आ रहा।
भगवान के समान है
वो जो हर घर
को चला रहा।
हर सपना वो
पूरा करते हैं,
ज़लाकर अपने
अरमानों की चिता
करने पूरी
बच्चों की ख्वाहिश,
हर सुबह निकल
पड़ता है 'पिता'।

उनकी हर डांट के बाद
मैंने कुछ सीखा है,
बच्चों के लिए
कुछ भी कर जाए वह पिता है।
जीवन में सिखाते तुम्हें
हमेशा यही है सीख,
उनसे भी काबिल बनो
इन्हीं में है इनकी जीत।
इनके बिना जिंदगी में
कुछ कम सा लगता है,
सब कुछ होते हुए भी
कुछ नहीं-सा लगता है।

पिता के बिना जिंदगी
वीरान-सी लगती है,
सफर तन्हा और राह
सुनसान-सी लगती है।
यूं तो दुनिया के सारे दर्द
हंस कर सह लेती हूं,
आंखों में आए
आंसुओं को रोक
नहीं पाती हूं।

अपने 'पिता' को करती हूँ
शत-शत प्रणाम।
जिन्होंने अपनी इच्छाओं
की बलि देकर,
मेरे सपनों को दी
एक नई उड़ान ।।

आस्था सिंह कुशवाहा
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

पता ही नहीं चला

बेचते-बेचते शहर में खुशियाँ
हम कब मुफ्त में
गम बाँटने लगे
पता ही नहीं चला,
वो फूलों का चमन लेकर
आये थे शहर में
उनकी राहों में काँटे
किसने बो दिए
पता ही नहीं चला,
अपनों का कारवाँ था
हमारे साथ भी,
मुझे तन्हा छोड़
एक एक कर
सब कहाँ गये कौन था
पता ही नहीं चला,
यूँ तो ज़ख्म
सभी के गहरे हैं
अपने ही बस्ते थे
फिर तीरों से दिल
पर कब वो ज़ख्म घाव बन गए
पता ही नहीं चला...
पता ही नहीं चला,
दिल में तो सब
छलनी करने वाला

विद्यावती
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

पुष्प सौंदर्य

प्रसून पुष्प में
जीवन का
क्षण-क्षण है,
व्युत्पन्न क्षीणकाय यौवन
पर प्रवृत कण-कण है।
प्रणव में उत्पत्ति का
रहस्य तिरोहित,
जिसमें पल्लव सा
इंद्रजाल विस्तृत है।
रश्मि चुंबन से शोभित
पुलकित मुकुल मुकुलित,
ऐसे रूप सौंदर्य में कल-कल
करता जीवंत सृजन है।

निशा कुमारी
हिन्दी विशेष तृतीय वर्ष

देख रहा हूँ -

मैंने सुना था
खून के रिश्ते
कभी फीके नहीं पड़ते
पर मैं आज
अपनों में ही
खंजर देख रहा हूँ।
ये जो ज़मीन है
रिश्तों की मेरे दिल में
उसे मैं बंजर
देख रहा हूँ।
मैं चाहूँ तो
कल्ले-ए-आम मचा दूँ,
तुम अंजान हो
अभी उस तूफाँ से
जो मैं अपने अंदर
देख रहा हूँ।
ये दुनिया मुखौटे
बदल रही है
और मैं किनारे बैठ
सबकी कलाकारियाँ देख
आँखे सेंक रहा हूँ।
बहुत भर गयी हैं
संवेदनाएँ भीतर
प्रेम, दया और
परोपकार
अब एक-एक कर सब फेंक रहा हूँ।

न जाने ये ज़िंदगी

न जाने ये ज़िंदगी
मुझे कहाँ ले जाना चाहती है ,
कभी खुशी, कभी गम दिखाती है ,
हर नया दिन उम्मीदों से उदासी
पर आकर खत्म हो जाता है ।
न जाने कितनी
ख्वाहिशें रोज मेरे
दिल में दबी रह जाती हैं।
रोज नये सपने दिखाती है ,
हर रोज एक नया
सबक सिखाती है।
कुछ गलतियाँ
मुझे अंदर ही अंदर खाती हैं।
कुछ अनकही बातें भी हैं
जो मुझे हर पल सताती हैं।
कुछ यादें ऐसी भी बनी
जो मुझे आज भी डराती हैं।
धड़कनें भी मेरी हर दिन मुझसे
कुछ कहना चाहती हैं।
न जाने ये ज़िंदगी
मुझे कहाँ ले जाना चाहती है।

विद्यावती
द्वितीय वर्ष हिंदी विशेष

और मैं

पहले दिल, फिर दिलरुबा,
फिर दिल के मेहमान
और मैं;
मैं न किसी का दिल
हो सका, ना दिलरुबा
मैं वो फर्ज ही रहा अपने
जिसे अपना ना सके
और पराए घबराते रहे
मैं घर की वो
चीख-पुकार ही रहा
जो बाहर सुनी ना जा सकी।
मैं दो कहानियों के बीच
एक तीसरी कहानी ही रहा,
जो अगर सुन ली जाती
तो आज कहानी
सिर्फ एक होती।
मैं वो फर्ज जो कभी
निभाया ना गया
मैं वो कर्ज जो
आज तक चुकाया ना गया
मैं वो खत
जो लिखा तो गया,
पर कही पहुंचाया ना गया।
मैं वो वायदा
जो किया तो गया,
पर निभाया ना गया।
मैं वो घर
जो छोड़ दिया गया
शहर में बस जाने को।
मैं वो पहली नौकरी
जो छोड़ दी गई
जिंदगी बेहतर बनाने को।
मैं वो रास्ता
जो पक्का हुआ तो
उसने गांव ही छोड़ दिया।
मैं वो ख्वाब
जो हकीकत हुआ
तो ख्वाब ही तोड़ दिया।
मैं वो आंसू
जो कभी बहाया
ना जा सका।
मैं वो सुख
जो कमाया ना जा सका
तुम्हारी आंखों में
बसाया ना जा सका।
मैं वो इश्क
जिसे जताया ना जा सका।

अद्विका तिवारी
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

घर

जमीन का एक हिस्सा
कहीं मिट्टी, कहीं पत्थर
कहीं लकड़ी का टुकड़ा।
कहां से शुरू करूं,
क्या करूं, क्या न करूं।
कशमकश और कसमों के बीच
वक्त गुजरता जा रहा है
रात धीरे-धीरे दिन,
और दिन धीरे-धीरे
रात होता जा रहा।
वक्त भी कितनी
अजीब चीज है ना
वक्त गुजरते हुए
वक्त नही लगता है।
वक्त के साथ-साथ
कुछ ईट आई, कुछ लक्कड़
कुछ सीमेंट, कुछ दरीचे
कुछ दरवाजे, कुछ खिड़कियां।
आई फिर कुछ हिम्मत ,
शुरू हो जाती है करामातें।
मन से मकान का
बनना शुरू हुआ।
दिन में थकान का
बनना शुरू हुआ।
और फिर बन जाता है
एक मकान।
मकान में बनते-बनते
बन गई कई यारियां,
बने कुछ रिश्ते कुछ क्यारियां।
दीवार, दरीचों और
दरवाजों से बना ये घर,
जिसके हर हिस्से में छिपा
है हाथों का अहसास।
मकान से घर का सफर
बहुत दिलचस्प रहता है,
मकान बनाया जाता है
और घर बसाया जाता है।
मकान कोई भी बनवा सकता है
सीमेंट, बजरी, मिट्टी से।
मगर घर,
घर कही भी हो सकता है ;
शटर के अंदर एक बड़ा बिस्तर ,
नदी के किनारे वो कालीन ,
दोस्त के बाजू वाली चेयर।
मकान घर बनता है,
जब लोग होते हैं ,
लोगो की यादें होती हैं,
जब कोई साथ हंसता है,रोता है ,
नाचता है, गाता है,
रूठता है,मनाता है।
जब कोई अपना दिन
अपनी रात
किसी जगह के नाम करता है,
तब जाकर कोई
मकान घर बनता है।

अद्विका तिवारी
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

प्रेम

यदि तुम प्रेम में हो
तो सुलझोगे,
शर्त है कि वह प्रेम ही हो
जिसमें खुद के अस्तित्व का.,
रह जाए अल्पज्ञान...

यदि तुम प्रेम में हो
तो सुलझोगे,
प्रेमिकाएं चाहती हैं ठहराव
ना प्यार की पुष्टि,
ना ही सत्यता का प्रमाण

यदि तुम प्रेम में हो
तो सुलझोगे,
निस्वार्थ हृदय प्रकट कर दो
फिर वो भागेगी नहीं
वो थामेगी हाथ,
चाहत के संग
फिर रहेगा सम्मान

यदि तुम प्रेम में हो
तो सुलझोगे,
तुम्हें समझ,अपनायेगी वो
और ले जाएंगी समझाने
रंग इश्क के तमाम

यदि तुम प्रेम में हो
तो सुलझोगे,
है ऐसी ही मेरी धारणा कुछ
समीकरण हैं मेरे,
और है प्रेम का विधान

यदि तुम प्रेम में हो
तो सुलझोगे,
ये खूबसूरती है मोहब्बत की
ख्वाब-खुशियों का परस्पर
होता है आदान-प्रदान...

यदि तुम प्रेम में हो
तो सुलझोगे,
बताओ उसे कठिनाइयां अपनी
सहजता से,प्रेमपूर्वक,
शायद पा जाओ निदान

यदि तुम प्रेम में हो
तो सुलझोगे,
अब सुनो उसकी भी बातें
जानो क्या वो ख्वाब सजाते,
खुलेंगे फिर अनकहे
सैकड़ों आयाम

यदि तुम प्रेम में हो
तो सुलझोगे,
और क्या उसके
सपनों को अपनाओगे?
उन्हें लक्ष्य तक पहुंचाओगे

आंचल झा
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

सीमित

सीमित है
सूरज का उगना-डूबना।
डूबता सूरज देख कर
समझ आया कि
उजाला सीमित है।
उगता सूरज देख
समझ आया कि
अंधेरे से सीमित रिश्ता ही
स्थिरता की राह है।
स्थिरता सीमित है
सीमित है राह भी,
खुद की परवाह भी।
सीमित उम्र है,
निश्चित मृत्यु है।
सीमित है आपकी काठी,
सीमित है लकड़ी लाठी,
सीमित है आपके
ताबूत का वजन।
सीमित है आपके ऊपर
ओढ़ाया गया कफन।
आपके लिए तय की गई
दो गज जमीन,
आपके नीचे बिछाए गई
आखिरी कालीन।
सीमित शब्दों से
जितना कह पाए, कहते गए
मुंह उठाए कहीं से भी
उठाए कागज पढ़ते गए ,
जितना पढ़ पाए पढ़ते गए
क्योंकि वक्त बेहद सीमित है।
सीमित है किसी को
हमेशा पसंद आना,
सीमित है किसी के दिल में
हमेशा होने का
समय तय कर पाना।
जितना भी बदल लो
खुद को या कर लो
कोशिश साथ रहने की ,
मगर सीमित है
वो पहला प्यार मुकम्मल
करने वालों की
गिनती में आना।
क्या प्रेम भी सीमित है ?
सीमित है गम यहां,
गम के बाद की खुशी
सीमित-सी है।
रस्सी उसमें पड़ने वाली गांठ
लोगों के अपने नवाबी ठाठ
क्या दुख सुख भी सीमित है ?

अद्विका तिवारी
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

ठीक उतनी मुहब्बत

जिसका पछतावा भी न हो
गर ऐसा इश्क मिले तुमको ,
तुम पूछो कि सब सच तो है।
एक मीठी नींद मिले तुमको,
तुम पूछो गिर जाने का डर।
तुम दरवाजे पर खड़ी रहो
लिखे कुछ खत मिले तुमको।
हाथ पकड़ ले वो फिर तो,
तुम बांहों में मिलो उसकी
तुम चाहो कुछ पल साथ चलें,
वो साथ मिले तुमको।
तुम हंसकर पूछो
इश्क है क्या ?
आंखें कुछ नम मिले तुमको ?
पर तुमको कैसा इश्क मिला
सीने में एक प्रश्न मिला।
चार कदम का साथ नहीं,
थामे जो कोई हाथ नहीं।
कितने रातें जागीं तुम
कितने शामें रोई हो।
वो जो होकर भी हुआ नहीं,
किसके सपनों में खोई हो ?
झूठ से आश्वस्त हो तुम
विष पीकर भी मस्त हो तुम
तुम उगता सूरज देख रही
अपने जीवन में अस्त हो तुम

अद्रिका तिवारी
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

वसंत ऋतु

वसंत ऋतु आई,
वसंत ऋतु आई,
प्रेम और उमंग की
भावना के संग ,
प्रेम और त्योहारों के रंग,
वसंत ऋतु आई
वसंत ऋतु आई।
माँ-सी प्यारी कोमल वायु,
गर्म छुहारे-सा कम्बल,
तो रेशमी चादर-सा दृश्य,
वसंत ऋतु आई,
वसंत ऋतु आई।
हो गए तैयार
गर्म कपड़े अंदर जाने को,
हैं तैयार सूती कपड़े
बाहर आने को,
कर तैयार और जोड़
अपने आप को इस ऋतु से।
बढ़ा अपनी क्षमता को
कर तैयार अपने आप को।
कर वादा अपने आप से,
ना डरेगा न रुकेगा,
अपने को सार्थक करेगा।

प्रियंका
बीकॉम प्रोग्राम प्रथम वर्ष

मेरे सतगुरु

मेरा वजूद कहाँ होता
कि जिंदगी में अगर
तू न मेहरबान होता।
तुम्हारी एक नजर
जाने क्या से क्या कर दे।
हो जो रंक
उनको भी बादशाह कर दे।
अगर न मिली नजर
सूना यह जहाँ होता,
कि जिंदगी में अगर
तू न मेहरबान होता।
कहीं पर शाम कहीं पर
सुबह गुजर जाती,
यह जिंदगी
किसी मोड़ पर ठहर जाती,
न हमकदम और
न कोई हमनवा होता,
कि जिंदगी में अगर तू ना,
मेहरबान होता।
मेरा वजूद कहाँ होता
कि जिंदगी में अगर तू न
मेहरबान होता।
अगर न मिलते तुम
सूना यह जहाँ होता,
कि जिंदगी में अगर तू ना
मेहरबान होता।
मेरा वजूद कहां और
मैं कहां होता।

गुंजन
बीकॉम प्रोग्राम प्रथम वर्ष

माँग

जिस्मानी मोहब्बत
के ज़माने में,
मैं ढूँढ रही
रूहानी मोहब्बत
खुद को ख्वाब बना
मैं रूप कैकेयी का धर
मंथरा के वचन सुना रही
जब ढूँढने
ख़ुद को निकली
तो ख़ुद में
ख़ुद को ढूँढ रही
पर मैं ख़ुद में ख़ुद की न रही।
तब कुछ न मिला,
तब मैं ही मैं को रट रही।
सपनों में हीर का
रांझा चुन रही
मैं नील-सी
नीलिमा लिए
लालिमा की चाहत कर रही
मैं बनना तो चाहती थी राधा
पर रुक्मणी से भाग्य मिला रही

निशा कुमारी
हिन्दी विशेष तृतीय वर्ष

जन्म शताब्दी वर्ष

हरिशंकर परसाईं

22.8.1923-10.81995

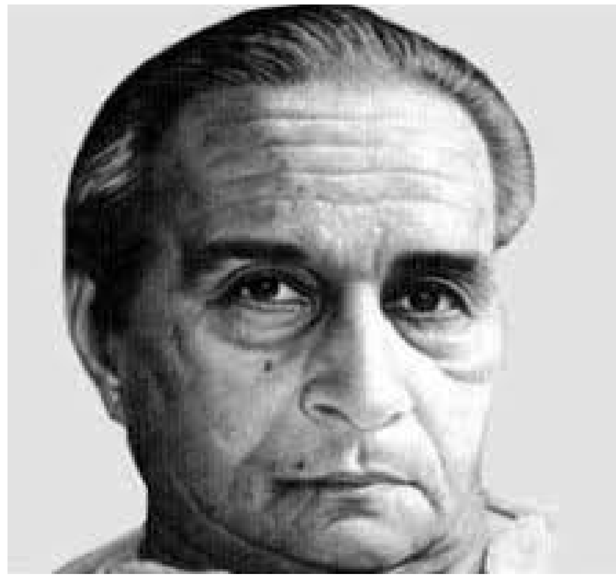

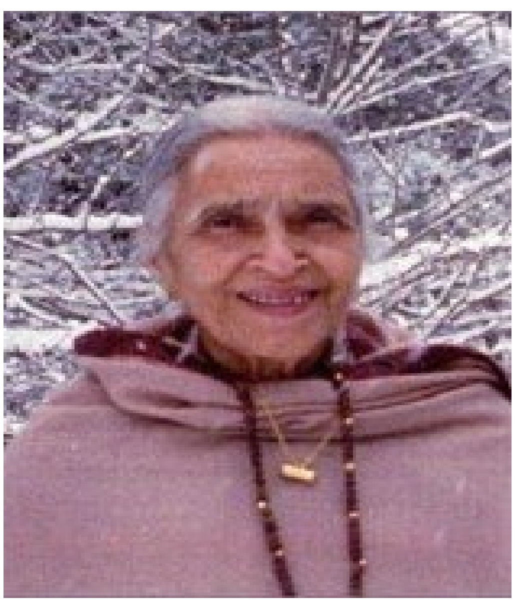

शिवानी

17.10.1923-21.102003

सोशल मीडिया और संबंध

सोशल मीडिया एक जनसंचार का माध्यम है। सोशल मीडिया एक ऐसा प्लेटफॉर्म है जिसके माध्यम से एक व्यक्ति संसार के किसी भी व्यक्ति से वार्तालाप कर सकता है। "इंटरनेट" सोशल मीडिया को वह स्तर प्रदान करता है जिसकी वज़ह से हम किसी भी विषय के बारे में जानकारी हासिल कर सकते हैं। सोशल मीडिया के जरिए मनोरंजन, आवश्यक जानकारी, किसी विषय हेतु ख़बर, हासिल कर सकते हैं। सोशल मीडिया के कुछ नामचीन प्लेटफार्म हैं-इंस्टाग्राम, ट्विटर, फेसबुक, स्नैपचैट, व्हाट्सएप, इत्यादि। व्हाट्सएप एक ऐसा माध्यम जो हम आमतौर पर इस्तेमाल करते हैं। इस पर हम लिखित व मौखिक दोनों ही तरह के संदेश भेज सकते हैं, तस्वीरें भी भेज सकते हैं। स्नैपचैट के भी अलग ही फायदे हैं- इस पर हम अपने गुप्त संदेश और हमारे पर्सनल संदेश भेज सकते हैं क्योंकि इस पर संदेश एक बार खोलने के बाद विलुप्त हो जाता है।

सोशल मीडिया के माध्यम से हम जानकारी एक जगह से पूरे विश्व में फैला सकते हैं। जहां सोशल मीडिया के बहुत से फायदे होते हैं वहीं बहुत से नुक़सान भी होते हैं। आजकल के बच्चे गिनती, अल्फाबेट्स, बाद में सीखते हैं पहले सोशल मीडिया का उपयोग करना सीखते हैं। सोशल मीडिया के जरिए जहाँ हम लोगों को जानकारी प्रदान कर रहे हैं वहाँ हम अपनी पर्सनल जानकारी भी सरेआम कर रहे हैं। सोशल मीडिया पर करोड़ों लोग होते हैं कई लोगों की नीयत काफ़ी बुरी होती है। वे इस जानकारी को तोड़–मरोड़ कर ग़लत उपयोग करते हैं, विशेष रुप से राजनीतिक पार्टियां इसका ग़लत उपयोग करती हैं। दूसरी पार्टी को ग़लत साबित करने के लिए किसी भी जानकारी का स्वरूप बदलकर उसे उकसाने वाली बनाकर उसको उपयोग करते हैं। बेशक वास्तविकता से उसका कोई लेनदेन नहीं होता। इंस्टाग्राम एक ऐसा मंच है जहाँ पर लोग फोटो में वीडियो की एडिटिंग करके भ्रम फैला सकते हैं, जिसके कारण बहुत ही जगह पर दंगे–फसाद हो जाते हैं।

साइबर अपराध आजकल की बहुत बड़ी समस्या है। इसके अलावा यह बहुत से मानसिक तनावों का कारण है। कई चिकित्सकों का मानना है कि सोशल मीडिया लोगों में निराशा और चिंता पैदा कर रहा है। यह बच्चों का मानसिक विकास रोक देता है। सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग करने वालों को नींद ना आने की

दिक्कत का सामना करना पड़ता है। कई लोगों को साइबर पुलिंग का सामना करना पड़ता है। सोशल मीडिया के कारण भड़काऊं भाषणों और अफवाहों के कारण हिंसा और जन-माल की क्षति होती है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से प्रसारित एडिटेड इमेज, हेरा–फेरी, झूठे संदेश के कारण बहुत-सी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। ऑनलाइन ट्रोलिंग सोशल मीडिया का एक नया उत्पाद है। इस कारण व्यक्ति की सुरक्षा एक बड़ा प्रश्न चिन्ह बनकर खड़ा हो गया है। इस दौर में महिलाओं की सुरक्षा पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। वैसे तो हम सभी को अपनी सुरक्षा का विशेष ध्यान रखना चाहिए और सोशल मीडिया का सीमित उपयोग करना चाहिए।

सोनिया चौहान
बी. एससी. जीव विज्ञान विशेष तृतीय वर्ष

कहानियाँ

बचपन और कहानियों का एक अलग ही नाता है। यह कहानी ही तो है जो जिंदगी को छोटी-छोटी सीख देती है। इस सीख पर बच्चों का व्यक्तित्व निर्भर करता है । आज भले ही बच्चों का दिल बहलाने वाली कहानियां है लेकिन उन नैतिक कहानियों से मिली शिक्षाएं यकीनन आज भी हम सभी के दिलों में जिंदा हैं । वही आज के दौर की बात करें तो हम बच्चों को बहलाने के लिए हाथ में टीवी का रिमोट या मोबाइल फोन थमा देते हैं और इस बात को भूल जाते हैं कि बच्चों को बहलाने से कहीं ज्यादा जरूरी है कि उनका ध्यान रखा जाए, उन्हें नैतिकता का पाठ पढ़ाया जाए । अब सवाल यह उठता है कि क्या नैतिक कहानियां आज भी महत्व रखती है? तो इसका जवाब है, हां ये कहानियों का जादू ही है जो बच्चों को जीवन भर यह भूलने नहीं देगा कि जिंदगी में नैतिक मूल्यों का होना कितना जरूरी है।

कुमारी नचिता
हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

सोशल मीडिया और संबंधों का बिगड़ता स्वरूप

आज के दौर में सोशल मीडिया ज़िन्दगी का एक अहम हिस्सा बन चुका है इसके बहुत सारे फीचर हैं, सूचनाएं प्रदान करना, मनोरंजन करना और शिक्षित करना मुख्य रूप से शामिल है। वर्तमान समय में सोशल मीडिया का प्रयोग तेजी से बढ़ रहा है और इसके साथ ही इसका प्रभाव भी बढ़ रहा है । संपर्क के साधन के साथ अन्य क्षेत्रों में इसके उपयोग में तेजी आ रही है। इसके कारण यह समाज के प्रत्येक पहलू को प्रभावित कर रहा है ,विशेष कर युवाओं के नैतिक और सामाजिक मूल्यों के साथ-साथ यह युवाओं की जीवन शैली और विचारों को प्रभावित कर रहा है। मनोवैज्ञानिक विशेषज्ञ डॉ. रोमा कुमार करते हैं कि सोशल मीडिया का अत्यधिक इस्तेमाल करने वाले युवा अपने जीवन का नियंत्रण अन्य लोगों के हाथों में दे रहे हैं। युवा सोशल मीडिया पर अपनी निजी ज़िन्दगी से खोलने लगा है, साथ ही अप्रामाणिक खबरों को भी वह सच मानने लगा है। जिसके कारण सोशल मीडिया का नकारात्मक पहलू भी सामने आ रहा है।

सूचनाओं के सफ़र में केवल युवाओं के विकास संबंधी सकारात्मक जानकारियाँ नहीं होती, बल्कि इसके अलावा अन्य कई प्रकार की सूचनाएं भी होती हैं। इंटरनेट पर ऐसी सोशल नेटवर्किंग साइट्स हैं, जो युवाओं के विकास से जुड़ी जानकारियों व प्रतिक्रियाओं से लैस है। यही कारण है कि यहाँ मामला एक तरफा नहीं होता। ऐसे माहौल में युवा को बहकाया नहीं जा सकता। इस प्रकार सोशल मीडिया के द्वारा युवा ज्यादा जागरूक हो रहे हैं। इस तरह से कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया ने युवाओं के विकास हेतु एक नया और बेहतर मंच प्रदान किया है। आज का समय इंटरनेट की मौजूदगी का है। लोग किसी भी सूचना को लेकर सोशल साइट्स के माध्यम से अपनी त्वरित टिप्पणी दे रहे हैं। ऐसी स्थिति में सोशल नेटवर्किंग साइट्स का भी दायित्व भी बढ़ता जा रहा है सोशल नेटवर्किंग साइट्स युवाओं के विकास से संबंधित जानकारी के लिए बेहतर सुविधा प्रदान करते हैं परंतु सामाजिक संबंधों में दरार, रिश्तों में धोखाधड़ी, मनमुटाव और दूरियाँ बढ़ाता है। सोशल मीडिया ने अश्लीलता, अभद्रता, पोर्नोग्राफी, विकृत नग्नता, उन्मुक्त और अमर्यादित अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित किया है। उपभोक्ताओं को सूचना के अनधिकृत उपयोग के लिए प्रेरित भी किया है। सोशल मीडिया साइबर अपराध के रूप में नए-नए छल प्रपंच के लिए भी उत्तरदायी है। इसके बावजूद सोशल मीडिया ना तो सिरे से खारिज किया जा सकता है और ना ही पूर्णत: निरापद माना जा सकता है। वस्तुतः इसके उपयोग के लिए संतुलित मानक प्रचालन प्रकिया और आदर्श आचरण संहिता की आवश्यकता है। कई शोध बताते हैं कि यदि सोशल मीडिया का आवश्यकता से

अधिक प्रयोग किया जाए तो वह हमारे मस्तिष्क को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है और हमें डिप्रेशन की ओर ले जा सकता है।

सोशल मीडिया बहुत सारी जानकारी प्रदान करता है, जिनमें से बहुत-सी जानकारियाँ भ्रामक भी होती हैं। उसे किसी भी प्रकार से तोड़ मरोड़ कर पेश किया जा सकता है। किसी भी जानकारी का स्वरूप बदलकर उकसाने वाली बनाया जा सकता है, जिसका वास्तविकता से कोई संबंध नहीं होता। सोशल मीडिया पर गोपनीयता की कमी होती है, साथ ही व्यक्ति का निजी डाटा चोरी का ख़तरा रहता है। साइबर अपराध जैसे हैकिंग या फिशिंग में भी इन साइट्स का योगदान पाया जाता है। सोशल मीडिया का अत्यधिक प्रयोग मनुष्य के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है।
साइबर अपराध सोशल मीडिया से जुड़ी सबसे बड़ी समस्या है। यह व्यक्ति की स्मरण शक्ति, सोचने की शक्ति, विश्वास की प्रवृत्ति आदि को कमजोर कर देता है। सोशल मीडिया के अनियंत्रित प्रयोग से संबंधों में दूरियाँ बन रही हैं । राजनीतिक पार्टियां सोशल मीडिया का ग़लत प्रयोग करती हैं। सामाजिक भाईचारा को इससे समाज में हिंसा को बढ़ावा दिया जा रहा है साथ ही व्यक्ति की सोच को भी नियंत्रित किया जा रहा है। फ़ेसबुक सबसे ज़्यादा धार्मिक भावनाएँ और राष्ट्रीय प्रतीकों के अपमान का निषेध करने वाले कानून का उल्लंघन करता है। वर्तमान में सामाजिक सौहार्द्र के सामने सोशल मीडिया एक चुनौती बनकर खड़ा है, जो अनेक भ्रांतियाँ फैलाता रहता है। विश्व आर्थिक मंच ने भी अपनी जोखिम रिपोर्ट माना है कि सोशल मीडिया के जरिए झूठी सूचना का प्रसार होता है। ऐसे में इस पर रोक लगाने का प्रयास करना भी महत्त्वपूर्ण हो गया है। अमर्यादित प्रयोग ने सोशल मीडिया की उपयोगिता पर ही सवाल खड़ा कर दिया है। जिसका प्रभाव युवा वर्ग पर पड़ रहा है। वर्तमान समय में सोशल मीडिया के प्रयोग ने युवाओं को समय से पहले आक्रांत कर दिया है। युवा तुरंत पहचान बनाना चाहता है बिना इंतज़ार के प्रतिष्ठित होना चाहता है और जब चाह नहीं पूरी होती तो वह आक्रामक व आपराधिक कार्यों में प्रवृत्त हो जाता है।

आज देश के सामने सबसे बड़ा यक्ष प्रश्न यह है कि युवा शक्ति का सदुपयोग कैसे करें। इसका जवाब सोशल मीडिया में ही छुपा है। अगर हमारे देश का युवा चाहे तो सोशल मीडिया के द्वारा अपने आप को एक अच्छा व्यक्ति बना सकता है। यहाँ वे अपनी अच्छाइयों व रचनात्मकता से रूबरू हो सकते हैं। सूचना के आदान-प्रदान, जनमत तैयार करने, विभिन्न क्षेत्र और संस्कृतियों के लोगों को आपस में जोड़ने, भागीदार बनाने और सबसे महत्त्वपूर्ण यह है कि नए ढंग से संपर्क करने में युवा अपना हाथ बढ़ा सकता है और सोशल मीडिया को एक सशक्त सामाजिक उपकरण के रूप में तैयार कर सकता है।

मोनालिसा मंडल
बी.ए.अंग्रेजी विशेष द्वितीय वर्ष

मेरे विचार

अगर मैं यह कहूँ कि हम सब एक भेड़-चाल का हिस्सा है तो सब मुझे पागल कहेंगे पर यह सच है। हर दिन मैं अपने आप से यह पूछती हूँ कि मैं करना क्या चाहती हूँ? क्या इस भेड़-चाल का हिस्सा बनकर खो जाना चाहती हूँ । आज तक इस सवाल का जवाब कभी आया नहीं। कभी लगता है इसका हिस्सा बन जाऊं तो कभी मन करता है इसमें न खो जाऊं। दिन कटे जा रहे हैं और रातें लंबी होती जा रही हैं। कभी लगता है कि खरगोश की तरह लंबी छलांग मार नदी पार कर लूं। पर कभी लगता है कि कछुआ बन कर सहमे कदम लेकर नदी पार कर आऊं। हम सब किसी दौड़ में भाग रहे हैं, किसी के पीछे बस कदम लेते जा रहे हैं। अब मैं आपसे पूछती हूँ क्या ये दौड़ खत्म होगी या बस जिंदगी भर हम इस भेड़ चाल का हिस्सा बने रहेंगे?

बेणुका झा
बी.एससी. लाइफ साइंस प्रथम वर्ष

मेरा अनुभव

भेड़ का छोटा सा बच्चा पहाड़ों की वादियों में हरी-भरी बुग्यालों के बीच कूदते हुए इधर-उधर फुदकते हुए अपने समूह से अलग खुशी से झूम रहा था। उसे आनंदित होकर झूमता देख मन कर रहा था मानो दिन भर उसे ही देखती रहूँ। उसके तन पर मानो सफेद चादर चढी हो और खिलती हुई धूप में वह छोटी सी भेड मनमोहक लग रही थी। उसे देखकर लग रहा था कि यह ज़िंदगी भी कितनी अच्छी है। इतने सुंदर माहौल में रहना और खुश रहना हो सकता है। यह केवल मेरे देखने का नजरिया हो, परंतु उस पल में वह जो मोहित करने वाला दृश्य था, उस में मैं अपनी सारी बातें ,परेशानियां भूल गई थी। एक छोटा बच्चा हमें जैसी प्रसन्नता देता है वैसी ही प्रसन्नता उस भेड़ ने मुझे दी। मैंने उसकी बहुत सी तस्वीरें लीं ताकि कभी कुछ उदासी आये तो शायद इस पल जैसी थोड़ी-सी खुशी दोबारा मिल जाए। मैंने उसके चरवाहे से पूछा तो पता चला वह केवल छह महीने की है,और उसका नाम सोना है। वहाँ मैं केवल एक घंटे के लिए रूकी थी और शाम भी हो गई थी, उनका भी घर जाने का समय हो ही चुका था। जाते समय ध्यान आया कि कुछ फल है तो मैंने सोना को देना चाहा, परंतु अंगूर थोड़े खट्टे निकले। जिस वजह से वो कूदने लगी,चरवाहे ने बताया कि सोना काफी चंचल है तो संभालने में ज्यादा ध्यान देना पड़ता है। मैं वहां से लौटना नहीं चाहती थी पर मुझे लौटना पड़ा।

सौम्या पाण्डेय
बी ए प्रोग्राम तृतीय वर्ष

बचपन

जीवन की संपूर्ण यादों में जो सबसे खूबसूरत यादें हम संजोते हैं, वह होती हैं हमारे बचपन की सुहावनी व हसीन यादें। बचपन जीवन का वह खूबसूरत पड़ाव है जहाँ हमें सारी दुनिया एक सपना लगती है काल्पनिक चीज़ें भी हम हकीकत मानने लगते हैं। उस वक़्त मम्मी-पापा, दादा-दादी सभी हम पर संपूर्ण प्रेम बरसाते हैं। बिना किसी रोक-टोक, जात-पात, ऊंच-नीच के हम अपना जीवन जीते हैं। न किसी चीज़ की टेंशन होती है और न किसी कार्य को करने का दबाव। आज जब हम अपने उस स्वर्ण युग को बहुत पीछे छोड़ कर इतना आगे बढ़ गए हैं कि न हमें अपना ख़्याल है और न ही उन काल्पनिक सपनों का, जो उस वक़्त सच लगा करते थे। हम जीवन के उस पड़ाव पर हैं जहाँ केवल और केवल सफल होना ही आवश्यक हो चुका है। भले ही उस कार्य को करते हुए हम खुश ना हों। पढ़ाई, नौकरी और ऐसे ही अनगिनत कारणों की वज़ह से अपने घर, सपने, हंसी-मजाक सबसे इतना दूर आ गये हैं कि उन दिनों को याद करके ही आँखें नम हो जाती हैं । वह बचपन में मम्मी का अपने हाथ से खाना खिलाना, पापा से खिलौने की ज़िद करना, दादा-दादी से कहानियाँ सुनना, वो चाँद को मामा और सूरज को चाचा बुलाना, परियों की कहानियों को सच मानना- हम सब कुछ बहुत पीछे छोड़ कर भेड़-चाल का हिस्सा बन गए हैं। ऐसा लगता है कि ज़िन्दगी छोड़कर ज़िन्दगी बनाने निकल पड़े हैं। काश ऐसा हो सकता कि हम फिर उन्हीं सुहावने, हसीन व खूबसूरत पलों को फिर जी सकें। ज़िन्दगी ने ऐसा ठगा हमें कि जवानी की झूठी तारीफों के बदले हमसे हमारा मासूम बचपन छीन लिया।

ज्योत्सना नरनौलिया
बी.ए.प्रोग्राम तृतीय वर्ष

मेला

'मेला'' शब्द सुनकर ही मन झूम उठता है। मेले से हमारा बचपन और उसका लगाव कभी ख़त्म ही नहीं होता है। बच्चा हो या जवान सबके अपने-अपने किस्से होते हैं इसको लेकर सबके अपने भाव होते हैं। जैसे बच्चा मेले में झूला झूलने, खिलौने लेने आदि के लिए जाता है, परंतु कोई बूढा व्यक्ति है वह अपनी इच्छाओं, यादों, बचपन को जीने जाता है। जवान लोग केवल वहाँ के उपभोग के लिए जाते हैं। मेला अक्सर नवरात्रों के दिनों में लगता है। उसमें रामलीला का मंचन भी होता है, जिसमें कलाकार कई पात्र निभाते हैं और लोग बड़े चाव से रामलीला देखने भी जाया करते हैं। उस समय लोगों के अंदर एक अलग प्रकार का उल्लास होता है। कई लोग वहाँ फुटपाथ पर दुकानें लगाते दिखते हैं तो कई लोग घूम-घूम कर सामान बेचते हैं। वहाँ कई लोग दोहरी ज़िन्दगी जी रहे होते हैं। वहाँ पर ग़ौर से देखो तो समानता और असमानता का घेरा दिखाई पड़ता है। कई लोग भीड में इसको देखते हैं क्योंकि उनमें उसे देखने का चाव और समझ ज़्यादा होती है जबकि जिन्हें हम वीआईपी की कुर्सियाँ देकर बैठाते हैं उन्हें उसकी कद्र नहीं होती । वहाँ पर कई बच्चे उन झूलों को एक उदासी भरी नज़रों से देख रहे थे; जो इस बात को दिखा रही थी कि वह उनमें बैठना तो चाहते हैं परंतु बैठने के लिए और ख़ुशी महसूस करने व उसका आनंद लेने में सक्षम नहीं हैं, जैसे कि उनके उम्र के और बच्चे हैं। उनकी आँखें इस बात की गवाह थी कि सबका बचपन एक जैसा नहीं होता । यह बात कहीं न कहीं मुझे महसूस हो रही थी इसलिए मैं उस बच्चे के पास गई और अपनी टिकट उसे दे दी। उसने अपनी नजरें झुका कर मना कर दिया। पर मेरे जिद करने पर झूला कर उसका चेहरा जिस तरह मुस्कुरा रहा था, वह कहना मुश्किल है।

आशु
बी.ए.प्रोग्राम तृतीय वर्ष

परिवार

परिवार एक शब्द नहीं होता, यह एक भाव होता है। एक परिवार सिर्फ़ कुछ लोगों के होने से नहीं बनता बल्कि उनके बीच में स्नेह, प्यार, गुस्सा, नाराज़गी इन सब भावनाओं से मिलकर ही बनता है। परिवार में बस रहना काफ़ी नहीं होता बल्कि एक दूसरे को समझना, बुरे समय में अपनों का साथ देना और सभी त्यौहार एक साथ मनाने से बनता है। एक परिवार में सभी आयु वर्ग के लोग पाए जाते हैं। दादा-दादी, नाना नानी उसके बाद माँ-बाप, चाचा-चाची, बुआ, मौसी, मामा, फिर उसके बाद बच्चे होते हैं। परिवार सिर्फ़ एक पीढ़ी से नहीं बनता बल्कि कई सारी पीढ़ियाँ होती हैं। एक अच्छा परिवार वहां बन पाता है जहां हमें बड़ों का आशीर्वाद, छोटों का प्यार, सही रास्ता चुनना, जीवन की सारी सीख मिलती हैं। जैसे चीनी के बिना चाय अच्छी नहीं बन सकती वैसे ही एक परिवार बनने के लिए यह तीनों पीढ़ियाँ आवश्यक हैं। सुख में तो हर कोई साथ देता है पर जो दुख में साथ देता है, वह एक परिवार होता है। अगर एक बच्चा सिर्फ़ माँ-बाप के साथ रहे तो वह बहुत सारी बातें जान नहीं पाता, पर अगर वह एक परिवार में रहे तो उसे बहुत कुछ जानने और समझने का मौका मिलता है। वह बड़ों का आदर करना, अपनी संस्कृति का सम्मान करना सीखता है। जैसे एक पेड़ को उसकी जड़ें मज़बूत बनाती हैं वैसे ही एक परिवार में सबका एक दूसरे के साथ खड़े होकर हर सुख-दुख में साथ देना एक अच्छे परिवार की पहचान होती है। जीवन में एक इंसान कितना ही बड़ा काम क्यों न कर ले पर जब वह दुखी होता है, तो उसे सबसे पहले उसका परिवार याद आता है ,क्योंकि वह जानता है कि यह दुनिया उसे एक बार में बुरा बना सकती है, उसे अकेला कर सकती है, पर उसका परिवार उसका साथ अवश्य देगा। अतः हमारे जीवन में परिवार का होना बहुत आवश्यक है।

प्रभाती जैना

बी ए प्रोग्राम तृतीय वर्ष

विज्ञापन

आज के समय में अलग-अलग प्रकार के विज्ञापन बाज़ार में दिखाई देते हैं। टेलीविजन, रेडियो व पोस्टर के माध्यम से विज्ञापन को प्रसारित किया जाता है। देश व विदेश हर जगह नए-नए प्रकार के विज्ञापन चर्चा में आते हैं। उपभोक्ता विज्ञापन में प्रस्तुत किए जाने वाले उत्पाद खरीदने की लिए दौड़ता है। विज्ञापन ने सभी के मन में एक स्थान बना लिया है। खान-पान, कपड़े, मोबाइल, टीवी, सौंदर्य प्रसाधन आदि के विज्ञापन देखने को मिलते हैं। विज्ञापन का निर्माण इस प्रकार से किया जाता है कि उपभोक्ता उससे प्रभावित हो। उनका मन मोह जाए और वह उस उत्पाद को खरीद लें। कई विज्ञापन ऐसे होते हैं जो लोगों को असल ज़िन्दगी में मदद करते हैं, पर हर विज्ञापन जैसा बताया जाता है वैसा काम नहीं करते हैं। विज्ञापन में दिखाई गई हर चीज़ लाभ दे यह ज़रूरी नहीं है। विज्ञापन में दिखाई गई चीज़ों को उपभोक्ता को सोच समझकर ही खरीदना चाहिए।

आँचल सिंह

बी.ए.प्रोग्राम तृतीय वर्ष

माता-पिता का महत्व

मैं जीवन में माता पिता के महत्त्व और उनके संघर्ष के बारे में बताना चाहती हूँ। मैं एक राजस्थान के छोटे से गाँव से हूँ और मेरे माता-पिता कृषि कार्य करते हैं। लेकिन जब हमारे पास जो होता है, हम उसकी क़दर ना करके और ज़्यादा पाने की चाह में रहते हैं और अपने आसपास के लोगों को महत्त्व नहीं देते।2019 में एक सड़क दुर्घटना में मेरे पिता का देहांत हो गया था। उनके जाने के बाद हमें उनका महत्त्व ज्ञात हो रहा है। जो हम खो चुके हैं, वह हम ही जानते हैं इसलिए हमें अपने परिवार को हमेशा प्राथमिकता देनी चाहिए। पिता हमारी ज़रूरत पूरी करने के लिए अपनी इच्छाओं को टाल देते हैं। मेरे जैसी गाँव में रहने वाली एक लड़की को दिल्ली जैसे शहर में भेजना बहुत ही बड़ा कार्य है। यहाँ आकर पता चला कि अगर कोई अपना है तो सिर्फ़ आपके माता-पिता और परिवार। आज मुझे कुछ समझ नहीं आता तो तुरंत माँ को कॉल करती हूँ और सब ठीक हो जाता है। जब सब साथ छोड़ देते हैं तब माता-पिता ही होते हैं जो आपके साथ खड़े रहते हैं।, मेरा दिल्ली आने का अनुभव कहता है कि हमें सबसे पहले उनको ही सब बताना चाहिए। लोग मजबूरी का फायदा उठा लेंगे, लेकिन माता-पिता सहयोग देंगे। हाँ, कभी-कभी हमारे विचार नहीं मिलते लेकिन एक बार ख़ुद से सवाल करो क्या हम सही है? अगर हाँ तो उनको अपने विचार समझाओ और वह समझ भी जाएगे।

पायल यादव
बी.ए.प्रोग्राम तृतीय वर्ष

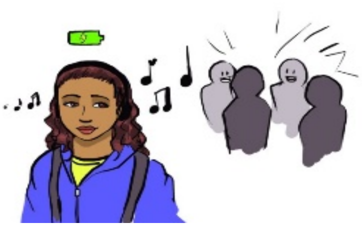

अंतर्मुखी व्यक्ति का जीवन

एक अंतर्मुखी व्यक्ति का जीवन आत्म केंद्रित और स्वतंत्र होता है। ऐसे लोग अक्सर अकेले रहना पसंद करते हैं या अपने ही विचारों में लिप्त रहते हैं। यह लोग सामाजिक वार्तालापों से भी दूर रहना पसंद करते हैं क्योंकि जब लोग उनसे घटनाओं से संबंधित प्रश्न पूछेंगे जो उन्हें पसंद नहीं होते। यह लोग वार्तालाप से दूर रहते हैं,सबसे घुल मिल नहीं पाते जिस कारण उनके कुछ ही मित्र होते हैं। यह व्यक्ति अपने विशेष रूप से चयनित दोस्तों के साथ गहरे और सार्थक संबंध बनाते हैं। ऐसे व्यक्ति अपनी धारणाओं और कल्पनाओं को महत्वपूर्ण मानते हैं। वह शांति और सकारात्मक माहौल को पसंद करते हैं और अपनी अंतर्निहित व्यक्तिगत दुनिया में घूमने का आनंद लेते हैं।

तनुप्रिया
बीकॉम प्रोग्राम प्रथम वर्ष

प्रकृति

प्रकृति वातावरण हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। वातावरण के बदलाव का प्रभाव मनुष्यों पर पड़ता है। हम प्रकृति का ख्याल रखेंगे तो प्रकृति भी हमारा ख्याल रखेगी। यदि हम कोई वृक्ष लगाते हैं तो आगे चलकर वह बहुत प्रकार से हमारी मदद करता है। हमें फल-फूल,छाया आदि प्रदान करता है। प्रकृति को हम बहुत से कारखानों और उद्योगों द्वारा दूषित कर रहे हैं। कारखानों द्वारा निष्काषित अपशिष्ट पदार्थ हम नदी या तालाब में विसर्जित कर देते हैं या वायु प्रदूषण करते हैं, तो आगे चलकर हमें ही इसके नुकसान होते हैं। प्रकृति का क्षय होने के कारण पूरे विश्व में ग्लोबल वॉर्मिंग का खतरा बढ़ गया है,जिससे मानव जीवन खतरे में नजर आता है। यदि हमारे द्वारा किए गए कार्यों पर रोक नहीं लगाई गई तो पृथ्वी पर जीवन मुश्किल हो जाएगा। हमें अपने पर्यावरण और प्रकृति को बचाने के लिए कार्य करने चाहिएं और अन्य लोगों में भी जागरुकता फैलानी चाहिए। हमें संसाधनों का सीमित उपयोग करना चाहिए। "3R" का उपयोग करना चाहिए -कचरे को कूड़ेदान में ही डाले, कचरे को खुले में ना जलाएं, पराली जलाने पर रोक लगानी चाहिए तथा त्योहारों के समय आतिशबाजी नहीं जलानी चाहिए। इन्हीं छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखकर हम अपने पर्यावरण को बचा सकते हैं। हमें अपने आस-पास सफाई का ध्यान रखना चाहिए क्योंकि प्रकृति हमसे ही बनती है और हम प्रकृति से। समय-समय पर पर्यावरण को बचाने के लिए बहुत से अभियान चलाए गए, परंतु वह पूरी तरह सफल नहीं हुए क्योंकि अभी भी लोगों में जागरुकता की कमी है। यदि हम सरकार द्वारा चलाए गए अभियानों सहयोग नहीं करेंगे तो उसका भी कोई फायदा नहीं होगा, जैसे गंगा नदी को साफ करने के लिए अभियान चलाया गया था परंतु वह कई जगह पर अभी भी वैसी ही है। हमें प्रकृति का महत्व समझना चाहिए और उसे बचाने के लिए कार्य करना चाहिए। यह तभी संभव है जब सभी लोग इस पर गंभीरता से ध्यान दें।

हंसिका

बी.ए.प्रोग्राम तृतीय वर्ष

छोटी-छोटी जीत

आजकल सब पैसे और नाम कमाने की दौड़ में लगे हुए हैं।सब बड़ी जीत को महत्व देते हैं और उन बड़ी चीजों में ही अपनी खुशियाँ ढूंढते हैं। पर वह भूल जाते हैं कि हमें छोटी-छोटी चीजों से मिलने वाली खुशियों पर भी ध्यान देना चाहिए,चाहे वह किसी भी प्रकार की क्यों न हो। सभी के लिए खुशी और जीत का अर्थ अलग होता है। एक छोटे से बच्चे को जब कोई एक टॉफी भी देता है तो वह खुश हो जाता है और वहीं किसी को कोई बड़ी चीज भी मिल जाए तो वह उसमें भी दुखी रहता है। जब हम कोई काम करें और वह दस लोगों को पसंद आए और पाँच को नहीं तो हम इस बात से खुश नहीं होंगे कि दस लोगों को पसंद आया है बल्कि इस बात से परेशान होंगे कि पाँच लोगों को पसंद नहीं आया। मैं तो बस इतना ही कहना चाहती हूं कि अपनी छोटी-छोटी उपलब्धियों में

खुश होना सीखें। अपनी उन उपलब्धियों को याद रखें। याद है मुझे अभी तक वह दिन जब मैंने एक प्रतियोगिता में भाग लिया। मैं उसमें जीत नहीं पाई वह अलग बात है, पर पूरे स्कूल के सामने स्टेज पर खड़े होकर बोलना मेरा आत्मविश्वास बढ़ा गया। मेरी वह छोटी सी जीत बहुत बड़ी खुशी और सबक बन गई।

ईशिका गर्ग

बीकॉम प्रोग्राम प्रथम वर्ष

माँ

ईश्वर ने संसार की सर्वश्रेष्ठ रचना जो बनाई है वो "माँ" है ।माँ दुनिया की सबसे बड़ी योद्धा है जो अपने बच्चे की खुशियों के लिए पूरे संसार से युद्ध कर सकती है। मैं ये जानती हूँ ईश्वर ने स्वयं के रूप में दुनिया में माँ को भेजा है।आजकल का युग बहुत भागदौड़ भरा है,तमाम तरह की मानसिक परेशानियाँ (डिप्रेशन, एंग्जाइटी,स्ट्रैस)व्याप्त है। जब भी मैं कभी तक जाती हूँ ,लो फील करती हूँ तो मैं तुरंत अपनी माँ से बात करती हूँ और उसके बाद मैं बहुत सकरात्मक महसूस करती हूँ। मेरी आदर्श मेरी मां है, मैंने जो कुछ भी सीखा माँ से ही सीखा है।वह मेरी प्रथम अध्यापिका रही और सबसे अच्छी मित्र भी हैं।मुझे लगता ही नहीं है कि वह मेरी माँ है, मुझे हमेशा उनके रूप में दोस्त दिखाई देता है। वह हमेशा मुझे कुछ न कुछ नया सिखाती हैं। पारिवारिक ज्ञान,संस्कार,मानवीय मूल्य, सामाजिक ज्ञान उनसे ही सीखने को मिला।मेरा गाँव उत्तराखंड में है। बहुत दूर होने के कारण हर महीने जाना संभव नहीं हो पाता इसलिए जब भी घर की याद आती है तो माँ के साथ बिताए पलों को याद कर लेती हूँ, उसके बाद लगता ही नहीं है कि मैं उनसे दूर रहती हूँ। मुझे लगता है वो हमेशा मेरे आस-पास हैं और तुरंत ऊर्जा से भर जाती हूँ।वो ज्यादा पढ़ी-लिखी नहीं है, पर एक कुशल गृहिणी हैं। वह चाहती हैं कि मैं पढ़ूँ, आगे बढ़ूँ, समाज में एक स्थान बनाऊं, उनको गर्व महसूस कराऊं। एक अच्छा इंसान बनने के साथ-साथ एक अच्छा जीवन व्यतीत करूँ। उत्तराखंड में चंपावत एक छोटा सा जिला है जो अभी भी पूर्ण रूप से विकसित नहीं हुआ है। वहाँ संसाधनों की कमी व जानकारी का भी बहुत अभाव है। मुझे अपने गांव की व्यवस्था पसंद नहीं है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था का बोलबाला है। लड़कियों को केवल बारहवीं तक पढ़ाया जाता है,तत्पश्चात बहुत कम उम्र में ही उनकी शादी कर दी जाती है। मुझे यह बिल्कुल पसंद नहीं था इसलिए मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया ताकि मैं अच्छी शिक्षा से अपने गाँव में व्याप्त कुरीतियों को बदल सकूं। इस में मेरे माता-पिता का बहुत बड़ा सहयोग रहा कि उन्होंने मेरे सपने पर विश्वास करके मुझे यहां भेजा। यही मुझे बहुत प्रेरणा देता है कि चाहे कुछ भी क्यों न हो जाए, कैसी भी परिस्थिति क्यों न हो आगे बढ़ना ही है।मै खुद को इतना मजबूत व सशक्त बनाना चाहती हूँ कि जिन लोगों के जीवन में हमेशा अंधेरा रहता है उनके जीवन में प्रकाश का स्रोत बन सकूँऔर उनके जीवन में बदलाव ला सकूँ।

निधि महरा

बी.ए.प्रोग्राम तृतीय वर्ष

सपने

हम सभी कोई न कोई सपना तो देखते ही हैं। हर व्यक्ति अपने जीवन में कुछ बनना या फिर कुछ करना चाहता है। इसके लिए हम कई विचार इकट्ठे करते हैं। हम बहुत सोच कर, बहुत समय देकर तय करते हैं कि हम अपने जीवन में क्या करना चाहते हैं ? प्रत्येक व्यक्ति अपने हिसाब से सोच-विचार कर अपनी इच्छा नुसार अपने सपनों का चयन करता है। हम यह भी कह सकते हैं कि बहुत से ऐसे व्यक्ति भी हैं जो दूसरों से प्रेरणा लेकर अपने सपनों को बुनते हैं। कुछ व्यक्ति दूसरों को देखकर उन्हें अपना रोल मॉडल बना लेते हैं। हर व्यक्ति अपना सपना तो जरूर देखता है। आपने भी कोई सपना तो जरूर देखा ही होगा, आप भी अपने जीवन में कुछ करना चाहते होंगे या कुछ बनना चाहते होंगे। जरा कुछ समय निकाल कर फिर अपने सपने के बारे में सोचें। जब हम अपने सपनों के बारे में सोचते हैं तो हम बहुत खुश हो जाते हैं। कब सुबह से शाम हो जाती है, पता ही नहीं चलता। हम अपने सपनों में इतने खो जाते हैं कि समय को तो भूल ही जाते हैं परंतु यदि हम सोचे कि हम अपने सपने चुनने में जो समय लग रहे हैं वह समय भी तो हमारे लिए महत्वपूर्ण है। हमें तो बस अपना सपना पूरा करना है, मगर कैसे इसके बारे में नहीं सोचते। हमें सपना देखने के साथ-साथ उसे कैसे पूरा करना चाहिए यह भी सोचना जरूरी है। उसे पाने के लिए वास्तव में काम करना भी जरूरी होता है। अब बात करते हैं कि कैसे इस पर काम किया जाए, कैसे हम अपने सपने को पूरा कर सकते हैं। हमें ज्यादा मेहनत करने की जरूरत भी नहीं है और हमारे लिए सपनों को पूरा करना इतना भी कठिन नहीं है। हम बहुत आसानी से सपने पूरे कर सकते हैं, हमें बस अपने आज पर ध्यान देना है। हम सोचते हैं कि हम कल से करेंगे वैसे करेंगे तो अपने सपने को पूरा करने के लिए आज कुछ करते ही नहीं है ,बस कल पर सारा काम डाल देते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि हम अपने सपनों को प्राप्त नहीं कर पाते और दोष अन्य चीजों या व्यक्तियों को देते हैं। परंतु वास्तव में गलती हमारी ही होती है हम ही आज कुछ करते ही नहीं।अगर हम अपने सपनों को पूरा करना चाहते हैं तो हमें बस उसके लिए आज से ही काम करना होगा। उसके लिए आज ही समय निकालना होगा, तभी हम सपनों को प्राप्त कर सकते हैं।

इसीलिए अंत में यह जरूर कहना चाहूँगी कि आपके पास बस आज ही है तो अपने आज में काम करें और फिर देखें आप कैसे अपने सपनों को प्राप्त कर सकते हैं।

छवि
बीकॉम प्रोग्राम प्रथम वर्ष

बढ़ती हुई गर्मी

वर्तमान समय में ग्लोबल वार्मिंग के कारण धरती का तापमान सामान्य से कई गुना बढ़ गया है। जिससे सामान्य जीवन में बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। जैसे कई पक्षी मात्र छाया ढूंढने के लिए इधर-उधर भटकते रहते हैं और इसी तलाश में गर्मी और पानी की कमी के कारण बीच सड़क पर मरे हुए मिलते हैं। मनुष्यों में तो दोनों पुरुषों और महिलाओं को आजकल त्वचा संबंधी समस्या हो रही है।उन्हें चेहरे और शरीरों पर फुंसी हो रही है। यदि हम ए.सी.की बात बात करें तो हर व्यक्ति ए.सी. का खर्चा संभाल नहीं सकता हैं।

गर्मी से बचाव के लिए सरकार को जानवरों के लिए पानी की व्यवस्था करनी चाहिए और पेड़ लगाने चाहिए। छाछ, लस्सी, बर्फ जैसे ठंडी चीजों का उपयोग करना चाहिए ताकि मनुष्य के शरीर का तापमान इस भीषण गर्मी में सामान्य रहे। सरकार अगर उपयुक्त कदम उठाए तो हम सभी गर्मी से बच पाएंगे।

प्रेक्षा शर्मा

बीकॉम.प्रोग्राम प्रथम वर्ष

भोजन

हमारे देश भारत में भोजन एक महत्वपूर्ण विषय है। हम लोग भोजन की पूजा करते हैं। हमारे देश में अतिथियों को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है उन्हें हम भोजन कराए बिना वापस नहीं भेजते हैं। कहते हैं जब हमारा तन भरा होता है तभी ही मन भरा होता है। भोजन करने के बहुत से गुण हैं जैसे भोजन हमारे शरीर को ऊर्जा देता है, हमारे दिमाग और पेट को संतुलित रखता है । भोजन न करने से व्यक्ति का दिमाग काम में नहीं लगता भोजन हमारे जीवन का बहुत अहम हिस्सा है। भोजन हमें संघर्ष की शक्ति भी प्रदान करता है। हमारे देश में भोजन को अन्नपूर्णा देवी से संबंधित माना जाता है। जो भी व्यक्ति का अन्न का अपमान करेगा, वह अन्नपूर्णा का अपमान करेगा, हमारे देश में भोजन के कई प्रकार हैं सभी राज्यों में अलग-अलग भोजन खाया जाता है। सभी राज्यों के अपने-अपने लोकप्रिय पकवान है। सब भोजन को मिल बाटकर खाना पसंद करते हैं। भारत के लोग किसी को भी बिना भोजन किए जाने नहीं देते। हमारे जीवन में भोजन का बहुत बड़ा महत्व है ।

दीपांशी देवेंद्र

बीकॉम प्रोग्राम प्रथम वर्ष

लिंग असमानता

हालांकि हम एक प्रगतिशील समाज समाज में रहते हैं, पर आज भी हम लिंग असमानता देखते हैं। चाहे वह काम की जगह पर हो या फिर घर में, यह हर जगह प्रचलित है। सभी लिंगों के लिए समान समाज होना जरूरी है। जब मैं लिंग असमानता की बात करती हूं तो यह बात महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव के संबंध में होती है।ऐसा क्यों होता है यह जानना भी जरूरी है। मेरे हिसाब से पहले के समय महिलाओं को कमजोर समझा जाता था जिस कारण उन्हें शिक्षा भी उपलब्ध नहीं कराई जाती थी। आज भी हम देखते हैं लोग महिलाओं को उच्च स्थान देने से पहले काफी बार सोचते हैं। मुझे ऐसा लगता है कि यदि स्त्री शिक्षा का समुचित प्रचार प्रसार हो तो बदलाव आ सकता है ।अच्छी बात यह है कि नगरों और महानगरों यह स्थिति बदल रही है और हम एक अग्रगामी समाज की ओर अग्रसर होते जा रहे हैं। फिर भी अभी बहुत सारे बदलाव की आवश्यकता है।

नेहा वर्मा
बीकॉम प्रोग्राम प्रथम वर्ष

भाषा का महत्व

भाषा के द्वारा ही हम सब अपने भाव, अनुभव या बातों को दूसरे व्यक्ति तक पहुँचाते हैं। अगर भाषा न होती तो हम अपने विचारों को ठीक ढंग से दूसरों तक पहुँचा ही नहीं पाते। भाषा के द्वारा ही किसी भी चीज का ज्ञान प्राप्त करना बहुत सरल होता है। हर राष्ट्र की अलग-अलग भाषा होती है और किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी भाषा से होती है। भाषा के माध्यम से हमारे काम आसानी से हो जाते हैं। हर काम में हमें भाषा का ही प्रयोग करना पड़ता है। भाषा के कारण ही मानव का जीवन आराम से चल रहा है। हमारे देश में हिंदी ज्यादा बोली जाती हैं। हिंदी बहुत सरल और सहज भाषा है यह भाषा कोई भी आसानी से सीख सकता है और पढ़ सकता है।

पायल कश्यप
बी.कॉम प्रोग्राम प्रथम वर्ष

कॉलेज की शुरुआत

मेरे कॉलेज के पहले दिन की शुरूआत कुछ इस तरह हुई। मेरी नए-नए लोगों से मुलाकात हुई। मन में एक डर सा था - नया माहौल कैसा होगा, कैसे लोग होंगे, कैसे मैं उनके बीच घुल-मिल पाऊँगी ।मुझे डर था कि इस भीड़ मे कहीं खो ना जाऊँ? लगता था कि क्या मैं इनके बीच रह पाऊँगी,? किसी को अपना दोस्त बना पाऊँगी? क्या मैं अपनी बातों को सबके सामने रख पाऊँगी। फिर शुरुआत हुई लेक्चर की ,मुलाकात हुई हमारी अध्यापिका से वह आयीं- उन्होंने हम सब से एक-एक कर बात की ,हमारे नाम पूछे, हम कहाँ रहते है, हमारी रुचियों के बारे में पूछा और हमें हमारे नये जीवन की बधाई दी। क्लास में सबसे पहले मेरी मुलाकात हुई मानसी चौधरी से हुई जो मुझसे बात करने आई उसने हाय -हेलो किया और इस तरह हमारी दोस्ती की शुरूआत हुई। दोनों का ही कॉलेज का पहला दिन था इसलिए हम साथ में कॉलेज घूम रहे थे और बाकी लोगों से मिल रहे थे। कुछ तस्वीरें खींची उन लम्हों को अपने-अपने कैमरे में कैद किया। फिर एक-एक कर हमारी अध्यापिकाएं आती रहीं। पहले दिन सभी ने एक ही सवाल पूछा सब ने हमारे बारे में जाना और खुद के बारे में थोड़ा बताया और इसी तरह पहला दिन खत्म हुआ। मैं अपने आप को उस जगह पर ठीक से समायोजित नहीं कर पाई और मैं घबरा सी गई ।अगले दो दिनों तक मेरा कॉलेज जाने का मन नहीं किया। मानसी का फोन भी आया और उसने पूछा कि तुम आई क्यों नहीं तब मैंने बहाना बना दिया कि लेट हो गई। अब उसे कैसे बताती कि मेरा मन वहाँ नहीं लग रहा। कोई अपना नहीं लग रहा। फिर क्या दो दिन खत्म हुए, तीसरे दिन जाना पड़ा और कितने दिनों तक बहाने बनाती। आखिर में वहीं मेरी ज़िंदगी की नयी राह की शुरुआत हो रही थी जो मुझे आगे ले जा सकती हैं। उस दिन मैं लेट हो गई थी और मुझे मानसी के साथ नही, पीछे बैठना पड़ा। क्लास शुरू हो हुई, नए लोग आए, नए चेहरे देखे। फिर चंचल आई जो मुझसे भी लेट थी, फिर उस दिन मानसी ने मुझे चंचल से मिलाया। चंचल से मुलाकात हुई, बात हुई, फिर दोस्ती होने की शुरूआत हुई। फिर हम तीनों ने साथ में तस्वीरें खींची, साथ में खाना खाया और इस तरह ये दो अनजान लोग मेरे दोस्त बने। इतनी सारी भीड़ में दो लोगों से कुछ इस तरह का रिश्ता बन गया जो कुछ समय के साथ-साथ अपने लगने लगे। इस तरह ये कॉलेज के तीन साल इन दोनों के साथ कैसे बीते पता ही नहीं चला। अब ये दिन खत्म होने को आ गए हैं। मुझे लगता है कि अगर ये दोनों नही मिलते तो कैसी होती ये कॉलेज की ज़िंदगी, क्या इतनी ही मौज-मस्ती होती, क्या ये यादें होती, क्या ये पल होते। जितना मुझे कॉलेज में आ कर सीखने को मिला नई चीजें देखने को मिली, नया करने को मिला नई-नई जगहें घूमने को मिलीं यदि मैं यहाँ नहीं आती तो क्या यह सब करने को मिलता? ये लोग मिल पाते जो मेरी आज की, कल की और हमेशा की ज़िंदगी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गए हैं। आज लगता है कि कॉलेज की शुरुआत भले ही थोड़े डर और मुश्किलों के साथ शुरू हुई थी, पर खत्म एक मुस्कान और अच्छी-अच्छी यादों से होगी। कॉलेज के तीन साल सिर्फ़ पढ़ने के लिए नहीं होते, वहाँ कुछ नया सीखने, दोस्तों के साथ मस्ती और लोगों को जानने -पहचानने के लिए भी होते हैं। कॉलेज आपको ऐसी यादें देता है जिसे हम अपनी ज़िंदगी के एक हिस्से में समा लेते हैं और उसे जब भी याद करते हैं तब मुस्कुरा देते हैं।

आज जब ये दिन पास आ रहे हैं तो समझ आ रहा है कि जहाँ हम आना नहीं चाहते थे आज हम वहाँ से जाना भी नहीं चाहते। कॉलेज सभी को जिदंगी की राह दिखाता है कैसे उसपर चलना हैं, कैसे उससे निकलना हैं।

अनुराधा कुमारी
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

फेमिनिज्म

फेमिनिज्म एक बहस का विषय है। क्योंकि आज के समय में लड़कियां अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने को तैयार हैं। बहुत वर्षों पहले तक औरतों को एक आम इंसान का अधिकार भी नहीं दिया जाता था परंतु यह हमेशा से इसी तरह नहीं चला आया है। असल में हमारे भारत देश में औरत को पूजा जाता था। क्योंकि हर स्त्री को देवी के रूप में देखा जाता है। विदेशियों के लगातार आक्रमणों के कारण स्त्रियों के लिए सब कुछ बहुत असुरक्षित हो गया।

अब धीरे-धीरे स्त्रियों को उनके अधिकार मिलने लगे हैं, परंतु आजकल स्त्रियाँ अधिकारों के नाम पर बहुत ही अजीब मांगें करने लगी हैं। वह स्वयं को बड़ा बनाकर पुरुषों को छोटा बताती हैं। स्त्री के बिना दुनिया नहीं चल सकती परंतु दुनिया केवल स्त्रियों से भी नहीं चल सकती । इसी बहस की वजह से आज पुरुषों और स्त्रियों के बीच एक अलग ही लड़ाई चल रही है। पुरुष स्त्रियों को समझने के लिए तैयार नहीं और स्त्रियां पुरुषों को। सबसे बुरी बात तो यह है कि आज के समय में दोनों में एक दूसरे के लिए नापसंदगी इतनी बढ़ चुकी है कि पुरुष स्त्रियों के बारे में बहुत बुरा बोलते हैं और स्त्रियाँ पुरुषों के बारे में।

एक हद तक फेमिनिज्म ठीक है; परंतु ऐसी बहस का कोई मतलब नहीं अगर दोनों वर्गों में एक-दूसरे के प्रति घृणा उत्पन्न हो। स्त्रियों को खुद अपने पैरों पर खड़ा होना आना चाहिए। एक स्त्री प्यार बांटने के लिए बनी है। जो इंसान तमीज और इज्जत से बात न करें उससे प्यार नहीं किया जा सकता। परंतु कोई बड़ा, छोटा, पुरुष या स्त्री आदर दे तो उनसे प्यार से बात करनी चाहिए ना कि खुद को बड़ा समझकर घमंडी बन जाना चाहिए।

कीर्ति
बीकॉम प्रोग्राम प्रथम वर्ष

महिलाओं की कहानियाँ

मैं एक स्त्री हूँ और अगर बात करें महिलाओं के जीवन की समस्याओं की तो एक समस्या है गंदे सार्वजनिक शौचालय। सरकार ने सार्वजनिक शौचालय बना तो दिए परंतु उसकी साफ-सफाई का ध्यान नहीं रखा जाता ।
दूसरी समस्या है महिला महाविद्यालय में सैनिटरी नैपकिन का आसानी से उपलब्ध न होना । आज के समय में कुछ कॉलेज ऐसे है जहाँ सैनिटरी नैपकिन मशीन नहीं है। हर महिला इस समस्या का शिकार होती है। सिर्फ कॉलेज ही नही बल्कि सार्वजनिक स्थानों पर भी सैनिटरी नैपकिन की मशीनें होनी चाहिएं । ताकि कभी किसी महिला को परेशानी का सामना न करना पड़े।
मासिक धर्म कोई बीमारी नही बल्कि एक प्राकृतिक प्रक्रिया है। माहवारी के प्रथम दिन में एक लड़की या महिला को बहुत दर्द और पीड़ा का सामना करना पड़ता है। इसके बावजूद भी उन्हे स्कूल, कॉलेज, या दफ्तर से अवकाश नहीं मिलता। इसलिए महिलाओं को ऐसे समय में 3 दिन का अवकाश मिलना चाहिए ताकि वो अपना और अपने स्वास्थ्य का ध्यान रख सके ।

ज्ञानवी जयसवाल
बीकॉम प्रोग्राम प्रथम वर्ष

डराना-धमकाना

संसार में हर व्यक्ति को कभी न कभी दूसरों के द्वारा डराया-धमकाया गया है। चाहे बचपन में खेल के मैदान में, कॉलेज में, कैफेटेरिया में या कार्यालय में आदि। दूसरों के द्वारा डराया-धमकाया जाना ज्यादातर स्कूल में देखा जाता है।डराने-धमकाने का शिकार होने के बाद बच्चे अपना आत्मविश्वास खो देते हैं । लोग दूसरों का मजाक तो बना देते है परंतु यह नहीं सोचते कि दूसरे को कैसा लगेगा। बढ़ते बच्चे जैविक परिवर्तन से गुजरते है। इस समय में उनकी मानसिक स्थिति बहुत कमजोर होती है। जब उन्हें धमकाया जाता है, तो वह अपना आत्मविश्वास, पढ़ाई में ध्यान आदि खो देते हैं।
बच्चे अपने परिवार में यह सब बताने से डरते हैं कारण है कि वह अपनी बात समझा नहीं पाते और घर के लोग उनकी बात समझ नहीं पाते। इसलिए यह जरूरी है कि स्कूलों में रैगिंग का विरोध किया जाए। माँ बाप अपने बच्चों पर ध्यान दे और दूसरो के द्वारा डराया -धमकाया जाना जैसे गंभीर रोगों को इस दुनिया से विलुप्त किया जा सके। आओ मिलकर"डराने धमकाने को न बोलें"।

संस्कृति पांडे
बीकॉम प्रोग्राम प्रथम वर्ष

कैरियर और परिवार के बीच संतुलन

कैरियर की उम्मीदों को परिवार की जिम्मेदारियों के साथ संतुलित करना एक आम समस्या है। जो लडकियों को प्रभावित करती है। यह समस्या सामाजिक उपेक्षाओं और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं को उत्पन्न करती है। जो अक्सर चिंता का कारण बन जाती है।

इस समस्या का समाधान करने के लिए यह आवश्यक है कि दोनों के बीच एक पूर्णतः संतुलित दृष्टिकोण अपनाया जाए जो कैरियर और पारिवारिक जीवन के लक्ष्यों को ध्यान में रखता हो। इस समस्या को दूर करने के लिए व्यक्ति को यह समझना होगा कि उसके लिए परिवार और कैरियर दोनों में से क्या अधिक जरूरी है? व्यक्ति को अपने कैरियर और पारिवारिक भूमिकाओं के संबंध में परिवार में खुली बातचीत करनी चाहिए और परिवार के सदस्यों को समझाएं कि उनके लिए परिवार और करियर में क्या सबसे जरूरी है? परिवार द्वारा व्यक्ति को अपने कैरियर और पारिवारिक भूमिकाओं में अपनी उम्मीदों को संवेदनशीलता से निश्चित करने में मदद करनी चाहिए। कभी-कभी ज्यादा उम्मीदें असफलता और निराशा की भावना पैदा करती है।उससे बचना चाहिए।

रिंकी
बी.कॉम प्रोग्राम प्रथम वर्ष

यथा चित्तं तथा वाचो यथा वाचस्तथा क्रियाः।
चित्ते वाचि क्रियायांच साधुनामेक्रूपता।।

तूलिका और रंग-संयोजन

अंबुज

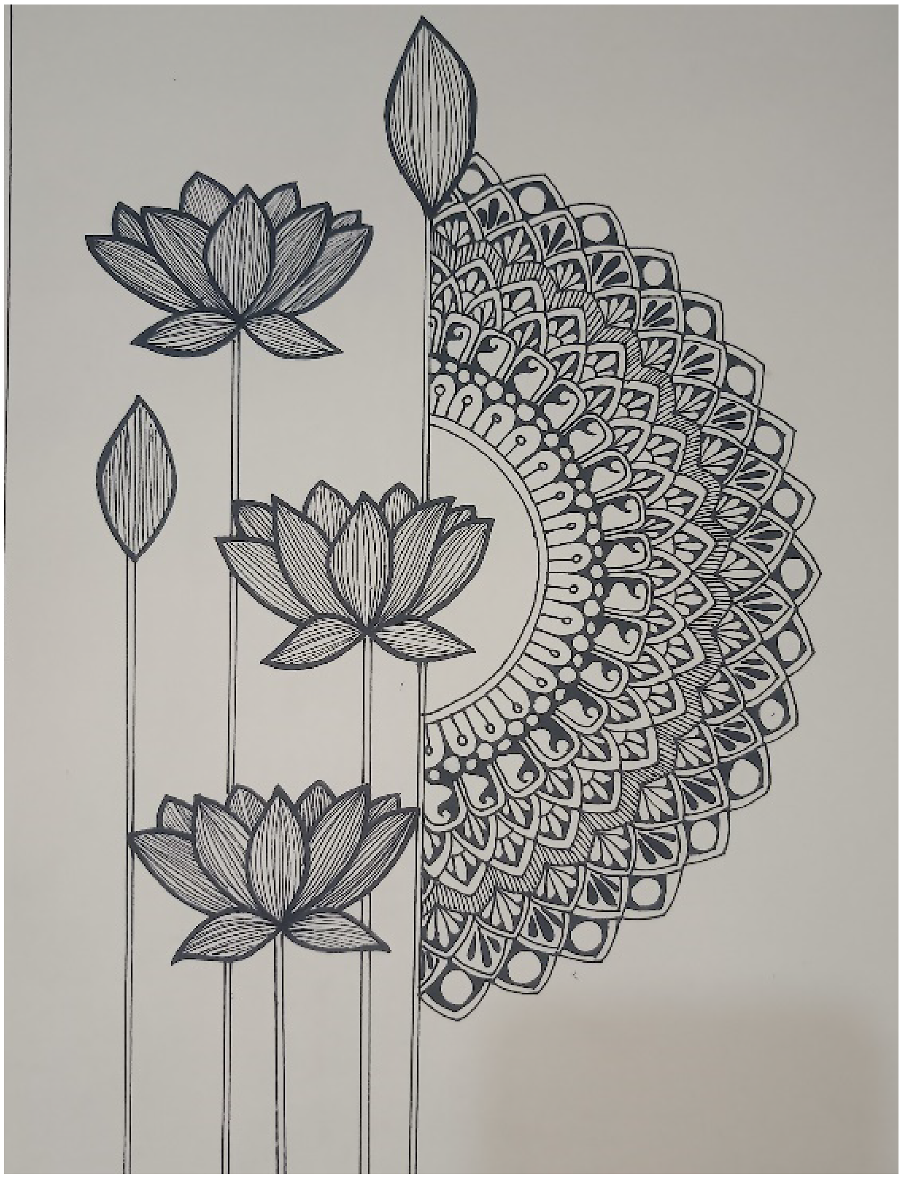

प्रगति
बी.कॉम प्रोग्राम प्रथम वर्ष

मनभावन

प्रगति
बी.कॉम प्रोग्राम प्रथम वर्ष

बेल-बूटा

प्रगति
बी.कॉम प्रोग्राम प्रथम वर्ष

सूर्य नमस्कार

प्रगति
बी.कॉम प्रोग्राम प्रथम वर्ष

सोच-विचार

तनिका भाटिया
बी.कॉम प्रोग्राम प्रथम वर्ष

पृष्ठभूमि

तनिका भाटिया
बी.कॉम प्रोग्राम प्रथम वर्ष

हूबहू

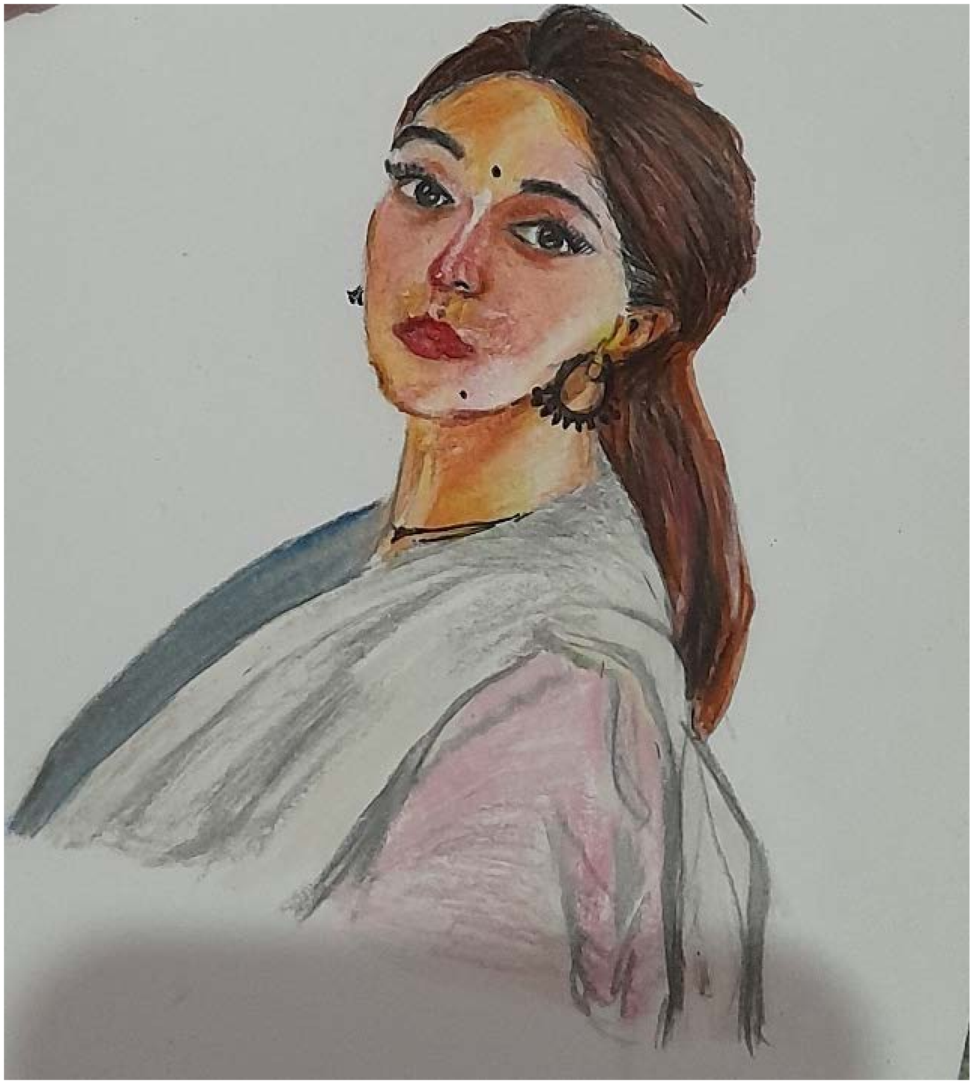

तनिका भाटिया
बी.कॉम प्रोग्राम प्रथम वर्ष

वनराज

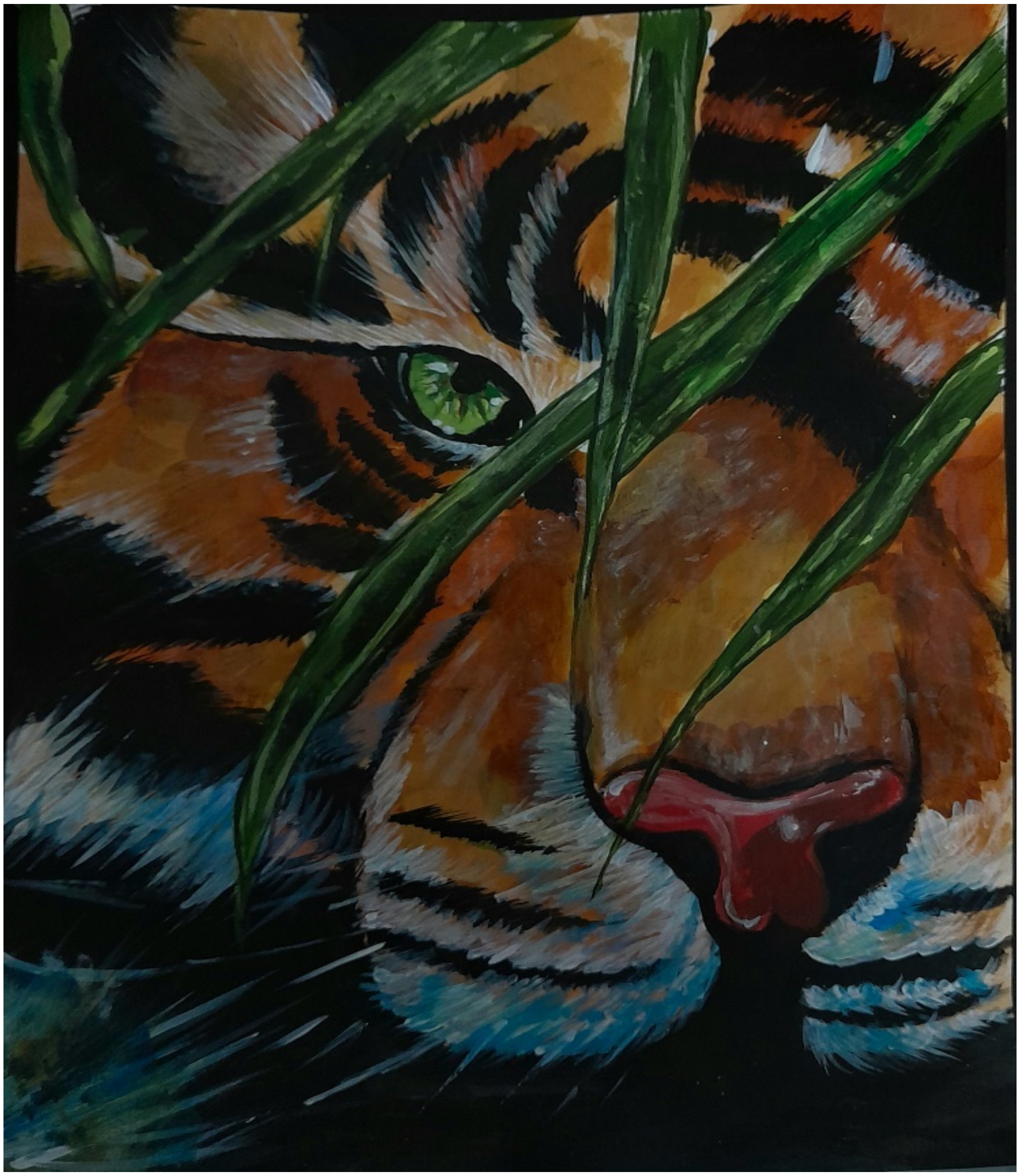

तनिका भाटिया
बी.कॉम प्रोग्राम प्रथम वर्ष

कैमरे की आंख और कॉलेज परिसर

फुलवारी

दीपांशी देवेंदर
बी.कॉम प्रोग्राम प्रथम वर्ष

हरियाली

डिंपल
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

दूरदृष्टि

दिशा सिंह
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

छत पर मोर

दिशा सिंह
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

मैदान

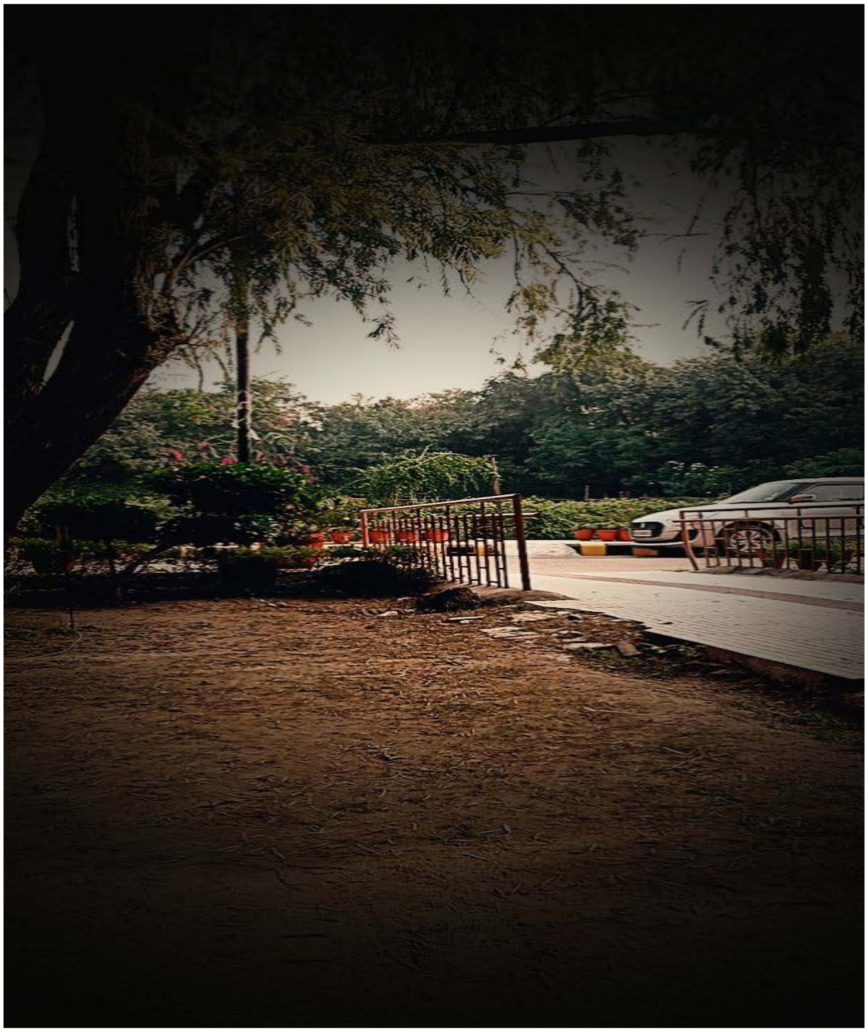

दिशा सिंह
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

हेलिकॉप्टर

दिशा सिंह
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

सघन हरीतिमा

दिशा सिंह
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

बैठे-ठाले

दिशा सिंह
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

सड़क पर मोर

दिशा सिंह
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

प्रौढ़ वृक्ष और मार्ग

दिव्या
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

प्रस्तुति

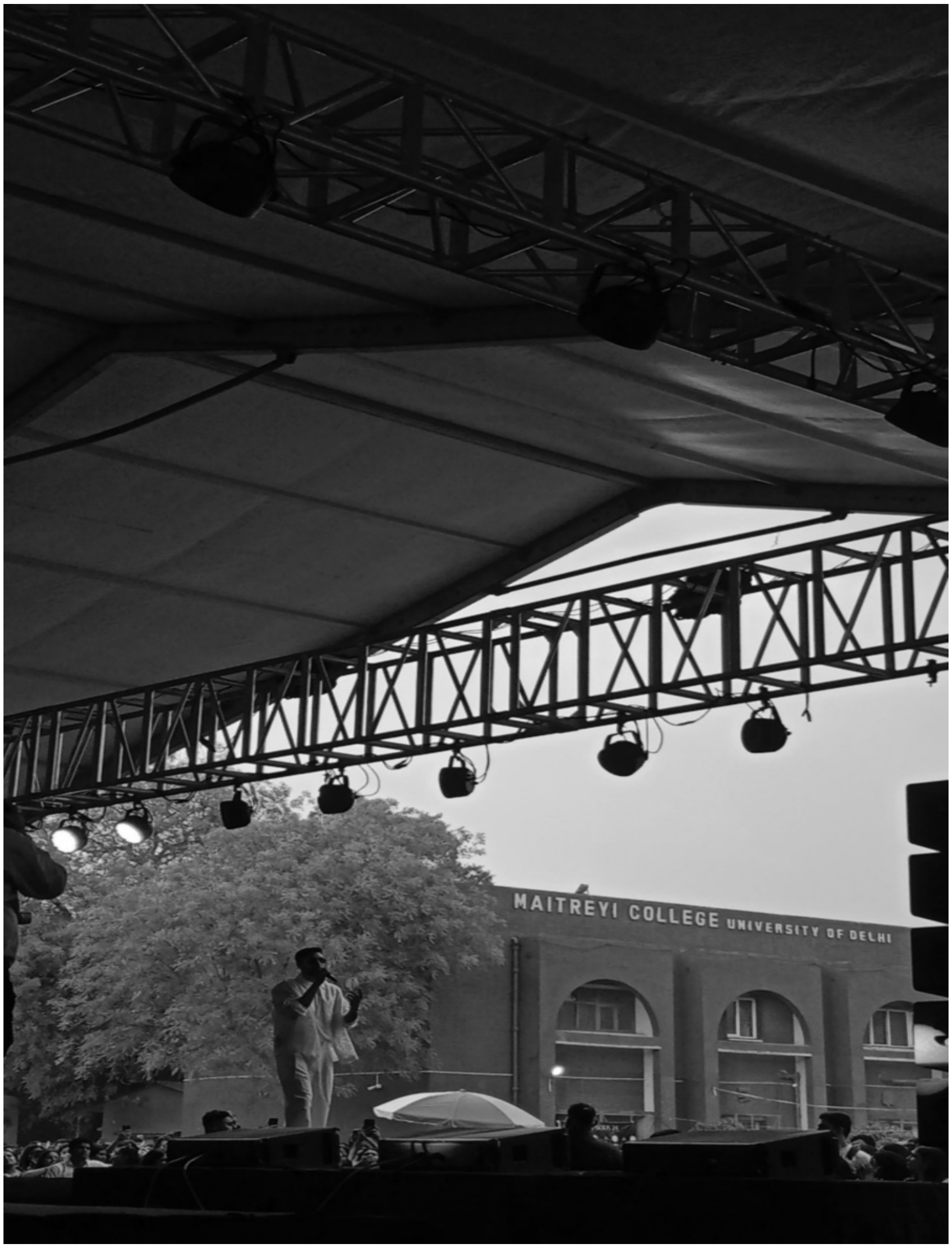

दिव्या

हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

बादल और पार्किंग

गुरसिरत
बी.कॉम प्रोग्राम प्रथम वर्ष

खिड़की पर चांद

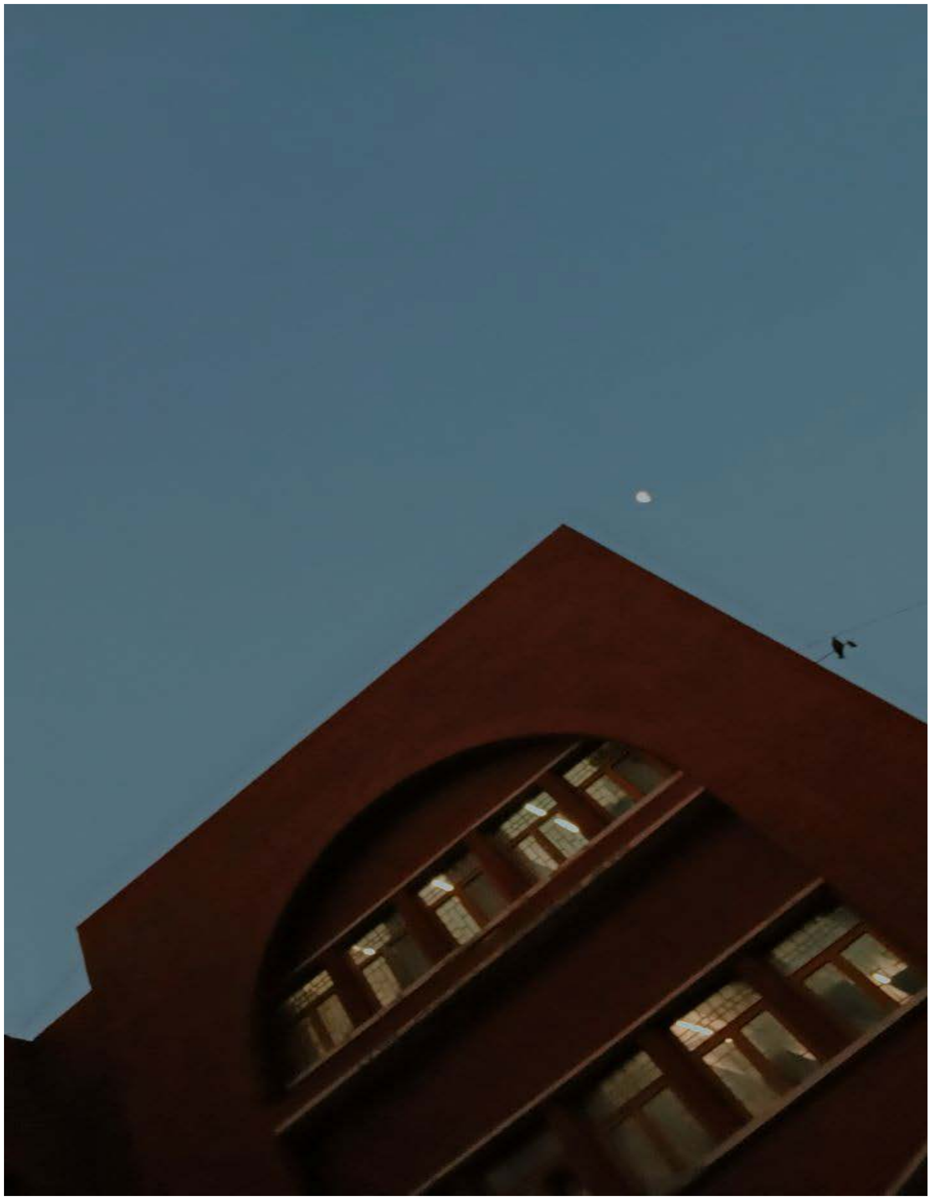

जान्हवी जायसवाल
बी.कॉम प्रोग्राम प्रथम वर्ष

बादलों के घेरे में

निकिता
बी.कॉम प्रोग्राम प्रथम वर्ष

नील गगन की छांव में

प्रियांशी
बी.कॉम प्रोग्राम प्रथम वर्ष

परछाईं

रोज़ी
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

पुष्प-सौंन्दर्य

रोज़ी
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

यूं ही

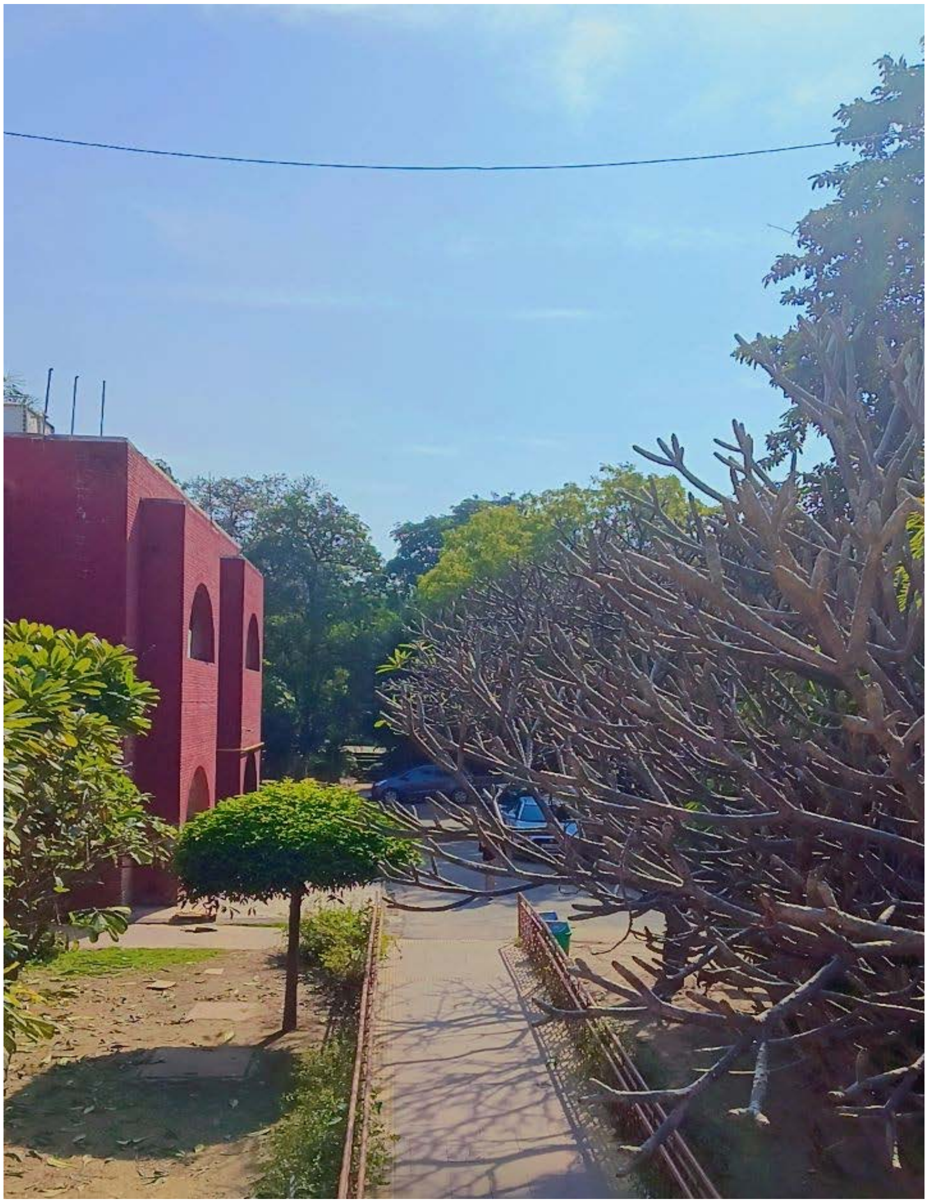

रोज़ी
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

किताबों की दुनिया

तनीषा
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

लाइब्रेरी

तनीषा
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

सड़क

तनीषा
हिंदी विशेष तृतीय वर्ष

मैत्रेयी महाविद्यालय

प्रतिबद्धता

स्त्री सशक्तिकरण
हेतु
मैत्रेयी महाविद्यालय
को
"ज्ञान केंद्र"
के रूप में प्रतिष्ठित करना